सत्यमेव जयते
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA
आसेतु
हिमाचलम
1767
सर्वेक्षण परिवार
वर्ष-2018
अंक-तृतीय

सर्वेक्षण परिवार

সর্বেক্ষন পরিবার

સર્વેક્ષણ પરિવાર

ಸರ್ವೇಕ್ಷನ್ ಪರಿವಾರ

സര്വേക്ഷ പരിവാർ

सर्व्हेक्षण परीवार

ସର୍ଭେକ୍ଷଣ ପରିବାର

ਸਰਵੇਕ੍ਸ਼ਨ ਪਰਿਵਾਰ

सर्वेक्षण् परिवारम्

سارپیکسهان پارگصار

சர்வேக்ஷன் பரிவார்

సర్వేక్షన్ పరివార్

سروکشن پریوار

Sarvekshan Pariwar

सर्वेक्षण परिवार - अंक 3

सर्वेक्षण परिवार

अंक – तृतीय

वर्ष – 2018

बंगभूमि से प्रारम्भ हुआ
250 बसंत के पार हुआ
भारत का पठारी प्रदेश या फिर हो हिमालय पहाड़
गंगा का मैदान या फिर विशाल मरुभूमि थार
तटीय प्रदेश हो, या तंग दर्रे
हमारे सर्वेक्षकों ने किया सबका सर्वे
विविधताओं से भरा हमारा देश
सर्वेक्षण कार्य आसां नहीं '**शुभेश**'
फिर भी पग-पग का किया सर्वेक्षण
भारत भूमि का सुन्दर, सटीक मानचित्रण
राष्ट्र की सेवा में सतत् समर्पित हमारा '**सर्वेक्षण परिवार**'
पत्रिका का तृतीय अंक प्रस्तुत है आपको साभार

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं लेखकों की व्यक्तिगत सोच है, कार्यालय प्रबंधन की भी यही सोच हो यह आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

यह पत्रिका विभागीय वेबसाईट www.surveyofindia.gov.in पर उपलब्ध है।

सत्यमेव जयते
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
DEHRA DUN
DELHI
CALCUTTA
BOMBAY
MADRAS
SURVEY OF INDIA
आसेतु
हिमाचलम
1767

अंक – तृतीय

वर्ष – 2018

सर्वेक्षण परिवार

संरक्षक व प्रधान संपादक

श्री संजय कुमार

निदेशक, पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता

साज–सज्जा, कम्प्यूटर सहयोग व सम्पादक

श्री शुभेश कुमार

प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

आवरण पृष्ठ–सज्जा व छायांकन सहयोग

श्रीमती सुपर्णा रॉय

अवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

रचनात्मक एवं टंकण सहयोग

श्रीमती सीमा मित्रा

भण्डारपाल (परिवीक्षाधीन), पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

मुद्रण

पश्चिमी मुद्रण वर्ग, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
DEHRA DUN
DELHI
CALCUTTA
BOMBAY
MADRAS
SURVEY OF INDIA
आसेतु
हिमाचलम
1767

ले जनरल गिरीश कुमार, वी.एस.एम.
Lt. Gen Girish Kumar, V. S. M.

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं. 37
देहरादून-248001(उत्तराखण्ड), भारत
Survey of India
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No.-37
Dehradun-248001 (Uttarakhand), India

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि पूर्वी क्षेत्र कार्यालय, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र तथा पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता द्वारा संयुक्त रूप से वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' का तृतीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

राष्ट्र की अखण्डता एवम् एकता को सुदृढ़ करने में राजभाषा हिन्दी एक सेतु का काम करती है। भाषा राष्ट्र की पहचान है, शासकीय कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग से राजभाषा की गरिमा बढ़ती है।

पत्रिका का प्रकाशन केन्द्र के अधिकारियों / कर्मचारियों की राजभाषा हिन्दी के प्रति रुचि एवम् जागरूकता का प्रतीक है। आशा है कि पत्रिका के इस अंक में विभाग से सम्बंधित वैज्ञानिक एवम् तकनीकी लेखों का भी समावेश होगा। इससे अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में अधिक-से-अधिक तकनीकी पत्राचार की प्रेरणा मिलेगी और उनका ज्ञानवर्द्धन भी होगा।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवम् पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(गिरीश कुमार, वी.एस.एम.)
लेफ्टिनेंट जनरल
भारत के महासर्वेक्षक

Fax : 00-91-135-2744268/2744064
E-mail: sgi.soi@gov.in
Tel : 00-91-135-2744268/2747051-58 Extn. 4350

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
Survey of India

नवीन तोमर
Naveen Tomar

अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र
Addl. Surveyor General, Eastern Zone

अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय
Office of the Addl. S.G.
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय
Eastern Zone Office
15, वुड स्ट्रीट 15, Wood Street
कोलकाता-16 Kolkata-16(WB)
ई-मेल/E-mail: zone.east.soi@gov.in

संदेश

यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि अहिन्दी भाषी 'ग' क्षेत्र में होने पर भी लगातार तीसरे वर्ष हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' का प्रकाशन कोलकाता स्थित कार्यालयों के द्वारा किया जा रहा है।

हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन का लक्ष्य अधिकारियों व कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम के कारण ही यह सम्भव हुआ है। विभागीय कामकाज में हिन्दी के प्रयोग के साथ-साथ हिन्दी पत्रिकाओं के माध्यम से लेख, कवितायें एवम् रचनाओं के प्रकाशन से ना केवल हिन्दी के प्रति पाठकों का रूझाान बढ़ेगा अपितु पाठक वर्ग हिन्दी में लेखन के लिए प्रेरित होगा। 'सर्वेक्षण परिवार' हिन्दी पत्रिका का लगातार प्रकाशन, राजभाषा हिन्दी के प्रचार व प्रसार में मील का पत्थर साबित होगा।

राजभाषा हिन्दी एक सुगम व सर्वग्राही भाषा है। सर्वजन द्वारा इसके प्रयोग से राष्ट्र की एकता को बल मिलता है। मेरी आशा है कि 'सर्वेक्षण परिवार' में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों को न केवल पसंद आएगी बल्कि उनका मनोरंजन व ज्ञानवर्द्धन भी करेगी।

मेरी ओर से पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए प्रकाशन मण्डल से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को तथा जिन लेखकों ने अपनी रचनाएं उपलब्ध कराकर पत्रिका के लगातार प्रकाशन को सम्भव बनाया है उन सभी को उनके सराहनीय प्रयास के लिए शुभकामनाएं।

नवीन तोमर

(नवीन तोमर)
अपर महासर्वेक्षक, विशिष्ट क्षेत्र,
उ.पू.क्षेत्र, पू. क्षेत्र, मु. क्षेत्र तथा मध्य क्षेत्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
Survey of India

संजय कुमार
Sanjay Kumar

निदेशक, पूर्वी मुद्रण वर्ग
Director, Eastern Printing Group

निदेशक का कार्यालय
Office of the Director
पूर्वी मुद्रण वर्ग कार्यालय
Eastern Printing Group
14, वुड स्ट्रीट 14, Wood Street
कोलकाता-16 Kolkata-16(WB)
ई-मेल/E-mail: wbs.gdc.soi@gov.in

संदेश

देश के एक भू-भाग में हिन्दी को लेकर यह भ्रांति रही है कि हिन्दी उनकी संस्कृति के लिए खतरा है। वे हिन्दी विरोध के लिए मुखर रहे हैं। किंतु भारत सरकार की यह नीति रही है कि हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान, बहुभाषी भारत को एक-सूत्र में पिरोने और परस्पर सम्वाद की सहजता के लिए, हिन्दी से बेहतर कोई भाषा नहीं है। सेवा क्षेत्र में LTC जैसी योजना, पर्यटन को बढ़ावा, व्यापार या नौकरी के लिए सुदूरवर्ती क्षेत्रों में प्रवास हिन्दी सिनेमा/गीत ऐसे कदम हैं जिनसे जनमानस ने हिन्दी की उपयोगिता को समझा ही नहीं अंगीकार भी किया है। आज लोकसभा में विपक्ष के नेता हो या रक्षा मंत्री महोदया हो या कृषि मंत्री, द्रविड़ क्षेत्र से ताल्लुक रखते हुए भी, मजबूती से अपनी बात हिन्दी में रखते हैं। पश्चिम बंगाल प्रांत की मुख्यमंत्री महोदया राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में अपने विचार हिन्दी में ही प्रकट करने का प्रयास करती हैं। अतएव जन-प्रतिनिधि अपनी बात हिन्दी में कहकर अपने और अपने दल के विचारों को देश के कोने-कोने में प्रभावी तौर पर पहुंचाते हैं। यह अंग्रेजी या अन्य भाषा में कर सकने में शायद मुश्किल होता। यही नहीं अभी कुछ माह पहले ही पुडूच्चेरी विधानसभा में एक सदस्य द्वारा हिन्दी नहीं आने के बारे में आह्वान किया कि वह हिन्दी सीखें, अन्यथा उन्हें भी हिन्दी की अज्ञानता के कारण राष्ट्रीय राजधानी में परेशानी का सामना करना पड़ेगा। ये बातें हिन्दी की अखिल भारतीय हैसियत को बयान करती है।

मेरा अपना मानना है कि अहिन्दी भाषी अपनी मातृ भाषा के साथ हिन्दी का व्यावहारिक ज्ञान हासिल कर हिन्दी भाषियों की तुलना में बेहतर स्थिति में होंगे। इससे हिन्दी भाषियों को भी क्षेत्रीय भाषा सीखने का दबाव पड़ेगा। सबका साथ होगा तो सबका विकास तेजी से होगा।

कोलकाता में ही, जहां हिन्दी सीखना अनिवार्य नहीं है, किन्तु हिन्दी व्यापक रूप से समझी और बोली जाती है। आज वे जितनी हिन्दी जानते-समझते हैं, उतनी बांग्ला नहीं आने की टीस मुझे भी रहती है। इसलिए कोलकाता स्थित कार्यालयों में कार्यरत अहिन्दी/बांग्ला भाषी प्रशंसा के पात्र हैं, जिन्होंने हिन्दी को सरकारी कामकाज में सक्रियता से शामिल करने के लिए रुचि दिखायी है। पत्रिका के तृतीय अंक का प्रस्तुतीकरण इसी भाव का प्रदर्शन है। आशा है पाठकों को यह पत्रिका रुचिकर और ज्ञानवर्द्धक लगेगी।

(संजय कुमार)
निदेशक, पूर्वी मुद्रण वर्ग

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

Survey of India

कर्नल रजत शर्मा

Col Rajat Sharma

निदेशक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

Director, WB & Sikkim GDC

निदेशक का कार्यालय

Office of the Director

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

WB & Sikkim GDC

13, वुड स्ट्रीट 13, Wood Street

कोलकाता-16 Kolkata-16(WB)

ई-मेल/E-mail: wbs.gdc.soi@gov.in

संदेश

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के तीनों कार्यालयों के संयुक्त प्रयास से वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। 'ग' क्षेत्र में कार्यालय की अवस्थिति के उपरांत भी यहां के लोगों में हिन्दी भाषा के प्रति प्यार और उत्साह का ही यह परिणाम है।

विविधताओं से भरे हमारे देश में जहां कदम-कदम पर भाषायी भिन्नता देखने को मिलती है, वहां राष्ट्रभाषा हिन्दी सभी भाषाओं को आपस में जोड़ने का कार्य बड़ी सहजता से करती है। इसी कारण सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग और उसके प्रोत्साहन पर अधिक बल दिया जाता है। पत्रिका में सम्मिलित अनेकों आलेख, काव्य रचनाएं, तकनीकी लेख, संस्मरण पाठकों को अवश्य पसंद आएंगे जो उनके मनोरंजन के साथ उनका ज्ञानवर्द्धन भी करेंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु इससे जुड़े सभी लेखकों/रचनाकारों और सभी सम्बंधित अधिकारियों / कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवम् इसके उज्जवल भविष्य हेतु मेरी शुभकामनाएं।

(रजत शर्मा)

कर्नल

निदेशक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

Survey of India

अमित अधिकारी
Amit Adhikary

प्रबन्धक (क.), पूर्वी मुद्रण वर्ग
Manager (Jr.), EPG

निदेशक का कार्यालय
Office of the Director
पूर्वी मुद्रण वर्ग कार्यालय
Eastern Printing Group
14, वुड स्ट्रीट 14, Wood Street
कोलकाता-16 Kolkata-16(WB)
ई-मेल/E-mail: epg.kol.soi@gov.in

संदेश

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता स्थित कार्यालयों के संयुक्त प्रयास से विभागीय पत्रिका "सर्वेक्षण परिवार" के तीसरा अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी एक मात्र भाषा है जो सभी क्षेत्रों में उपयोग किया जाता है। हिंदी हमारे देश की राजभाषा है। सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग के लिए प्रचार-प्रसार हेतु गृह पत्रिका "सर्वेक्षण परिवार" का योगदान काफी महत्वपूर्ण है। इस पत्रिका के माध्यम से प्रत्येक अधिकारी / कर्मचारी अपना ज्ञानवर्धक जानकारियाँ रखने के लिए बधाई के पात्र हैं ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को बधाई एवं मेरी शुभ कामनाएं।

अमित अधिकारी

(अमित अधिकारी)
प्रबन्धक (क०)
पूर्वी मुद्रण वर्ग

संपादक की कलम से.....

विभागीय हिंदी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के तृतीय अंक को आपके सम्मुख रखते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

रचना क्या है, कुछ शब्दों का ताना-बाना ।
कुछ अपनी, कुछ सबकी, बात वही जाना-पहचाना ।।
कुछ शब्दों से छंद बने और गीत बने ।
कुछ छंदों ने काव्य रूप मनमीत गढ़े ।।
कुछ रचना ने सुलझाई अनसुलझी गुत्थी ।
भेद खोल जीवन के ढंग दिखाई है सच्ची ।।
कुछ महाकाव्य बन पूजित हैं, ईश्वर के समकक्ष हुए ।
जीवन को परिभाषित करती, कुछ से जीवन को लक्ष्य मिले ।।

इन्हीं कुछ रचनाओं के ताने-बाने से बना 'सर्वेक्षण परिवार' अपनी तृतीय वर्षगाँठ मनाता हुआ आपके सामने उपस्थित है।

तकनीकी विभाग होने और क्षेत्र 'ग' में अवस्थिति के कारण हिंदी भाषा के प्रति आकर्षण कम होना स्वाभाविक है, परन्तु हिंदी भाषी क्षेत्र से आए निदेशक महोदय के सफल निर्देशन में और राजभाषा हिंदी के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का भली भांति निर्वहन करते हुए उनके द्वारा किये गए अनेकों उल्लेखनीय प्रयासों के कारण कोलकाता स्थित कार्यालय में राजभाषा हिंदी के अनुप्रयोग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। साथ ही विभिन्न कार्मिकों के बीच हिंदी के प्रति आकर्षण में वृद्धि भी हुई है। कार्यालय द्वारा निर्बाध रूप से तृतीय वर्ष हिंदी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' का सफल प्रकाशन इस बात का प्रमाण है।

यह पत्रिका अपने प्रथम अंक से लेकर वर्तमान अंक तक अपनी कमियों को दूर करते हुए उत्तरोत्तर विकास के नए सोपान चढ़ रही है। इस अंक में सम्मिलित अनेकों महत्वपूर्ण आलेख, यात्रा संस्मरण, तकनीकी लेख, कहानियां और काव्य रचनायें सभी पाठकों का मन मोह लेगी, ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

पिछले अंक के सफल प्रकाशन और उस पर पाठकों के मिले महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं ने हमें तृतीय अंक के प्रकाशन के लिये प्रेरित किया। हमें आशा है कि आप पत्रिका के बारे में अपने बहुमूल्य विचारों/टिप्पणियों से हमें अवश्य अवगत कराएंगे।

अपने बहुमूल्य विचारों को प्रेषित करने के लिए कार्यालय के पते का अथवा निम्नलिखित ई-मेल पते का प्रयोग करें।

धन्यवाद ।

Shubhesh.soi@gov.in
wbs.gdc.soi@gov.in

अनुक्रमणिका

संदेश			-	7-11
सम्पादकीय			-	12
काव्य रचना				
हे प्रभु -निवेदन	-	शुभेश कुमार	-	15
कहां खो गया वो बचपन	-	शुभेश कुमार	-	22
नेताजी	-	काली प्रसाद मिश्रा	-	30
हम आम जनता	-	शुभेश कुमार	-	35
सुविचार	-	सीमा मित्रा	-	36
माँ	-	सीमा मित्रा	-	36
बेटियाँ जब खड़ी होगी	-	सजल कुमार घोष	-	43
नारी	-	काली प्रसाद मिश्रा	-	44
हम भारतीय कहलाते हैं	-	परिमल दास	-	50
कहानी लेखन				
बचपन सबसे सुन्दर	-	सुपर्णा रॉय	-	16
बबलू की समझदारी	-	बिश्वनाथ नाग	-	20
पानी	-	शुभेश कुमार	-	23
नजरिया	-	बी. के. सोनपरोते	-	60
टेण्डर	-	काली प्रसाद मिश्रा	-	58
मन में परिवर्तन	-	महादेव गोरखनाथ सूर्यवंशी	-	59
आलेख				
स्वच्छता	-	अमित अधिकारी	-	14
दिन की शुरुआत	-	बी. के. सोनपरोते	-	17
हिन्दी भाषा राष्ट्र की अभिव्यक्ति	-	अनिरुद्ध बासु	-	18
जलेबी की तरह सीधी बातें	-	शुभेश कुमार	-	26
हावड़ा पुल- महत्वपूर्ण तथ्य	-	भाष्कर नस्कर	-	28
भारतीय सर्वेक्षण के बहुमूल्य रत्न	-	मनीष कुमार ढोके	-	45
हिन्दी का भविष्य	-	नागेश्वर गोप	-	55
स्वतंत्रता दिवस	-	देवनारायण सिंह	-	56
पहले लक्ष्य तय करें	-	बी. के. सोनपरोते	-	59
मैं हूं ना	-	मकरंद गोपाल कुलकर्णी	-	60
परिपक्व व अनुभवी व्यक्ति	-	बी. के. सोनपरोते	-	61
धर्मपद	-	कृष्ण चन्द्र दास	-	64
संस्मरण/यात्रा वृतांत				
खूबसूरत यादें	-	रुप कुमार दास	-	29
वर्षा की एक रात	-	देबेश रॉय	-	34
मेरी दक्षिण ध्रुवीय यात्रा	-	आनन्द कुमार	-	37
मेरे सेवाकाल के कुछ अनुभव	-	रुप कुमार दास	-	52
अध्यात्म-चिंतन				
संत कबीर के विचार आज कितने प्रासंगिक	-	शुभेश कुमार	-	31
मैं और तुम	-	देबेश रॉय	-	49
तकनीकी लेख				
डिजिटलीकरण से फायदा	-	अरिन कुमार दत्ता	-	25
मुद्रण रंगों का सुमेलन	-	पी. कुमार	-	57
कम्प्यूटर के जादुई ट्रिक्स	-	उत्तम कुमार साधुखाँ	-	65
बाल-मन				
चित्रांकन	-	शुचि दास	-	62
गुदगुदी	-	सीमा मित्रा	-	63
फोटो-गैलरी				

स्वच्छता

साफ-सफाई और जल जीवन के लिए बहुत जरूरी है। इसके अभाव में स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। सरकार मानवाधिकार के रूप में स्वच्छता अभियानों को चला रही है, जैसे :- खुले में शौच मुक्ती, स्वच्छ भारत अभियान एक अभूतपूर्व कार्यक्रम है इस कार्यक्रम के तहत जीवन कि गुणवता में सुधार करना स्वच्छता के दायरे को बढ़ाना एवं कचरा प्रबन्धन पर ध्यान रखना, इन सब कार्यों को करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

प्रधानमन्त्री ने वर्ष 2014 में स्वतन्त्रता दिवस को यह कहा था कि 02 अक्टूबर 2019 तक देश को स्वच्छ बनाना है। खुले में "शौच से मुक्ति" का संकल्प एक एतिहासिक कार्यक्रम है। 21 वीं शताब्दी में भारत में गंदगी और खुले में शौच के लिए कोई जगह नहीं है। सरकार ने स्वच्छता में दिलचस्पी दिखाई है और इसे राष्ट्रीय प्राथमिकता में रखा है।

पूर्वी मुद्रण वर्ग, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता में भी प्रत्येक वर्ष के भांति 01 मई से 15 मई 2018 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। कार्यालय के प्रत्येक अनुभागों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

आशा करता हूँ कि कार्यालय के समस्त लोग अपने घरों में एवं आस पास भी साफ़ सफाई को रखने का पहल करते रहेंगे।

--श्री अमित अधिकारी

प्रबन्धक(कनिष्ठ)

सम्पर्क सूत्र:

14, वुड स्ट्रीट

पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता-16

हे प्रभु – निवेदन

हर भेष में तू, सब देश में तू
कण-कण में तू ही, हर क्षण में तू ही
तुम राग में हो, अनुराग में हो
तुम प्रीत, प्रेम और त्याग में हो

तुम मातु-पिता, तुम बन्धु-सखा
तुम सन्यासी, तुम जोग-जती
प्रभु राम तू ही, और कृष्ण तू ही
गौतम-महावीर-नानक तूम ही

तुम सूर तुलसी और मीरा हो
जन-जन का मान कबीरा हो
कर्म तू ही, सब धर्म तू ही
जीवन के सारे मर्म तू ही

घट बाहर भी, घट भीतर भी
घट-घट में बसो, सब घट में रमो
सब जीव में तुम समदरशी हो
सुख-दु:ख में सदा मन हरषी हो

सर्वत्र तू ही, सर्वज्ञ तू ही
ज्ञान तू ही, मर्मज्ञ तू ही
तुम दूर नही, तुम पास में हो
तुम आस में हो विश्वास में हो

हम जाएं कहां कुछ भान नहीं
कहें कष्ट किसे कुछ ज्ञान नहीं
सर्वत्र तू ही, फिर कष्ट है क्यूं
सर्वज्ञ तू ही, फिर मौन है क्यूं

प्रभु मैं अज्ञानी हूं शायद
कुछ मान-गुमान हमें शायद
तुम पुत्र जानि हमें माफ करो
हमको अब भव से पार करो

अब और नहीं कुछ तृष्णा शेष
विनती कर जोड़ि करै 'शुभेश'

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सम्पर्क सूत्र:
13, वुड स्ट्रीट, भारतीय सर्वेक्षण विभाग
कोलकाता-700016
दूरभाष- 90186 28222
ई-मेल : shubhesh.soi@gov.in

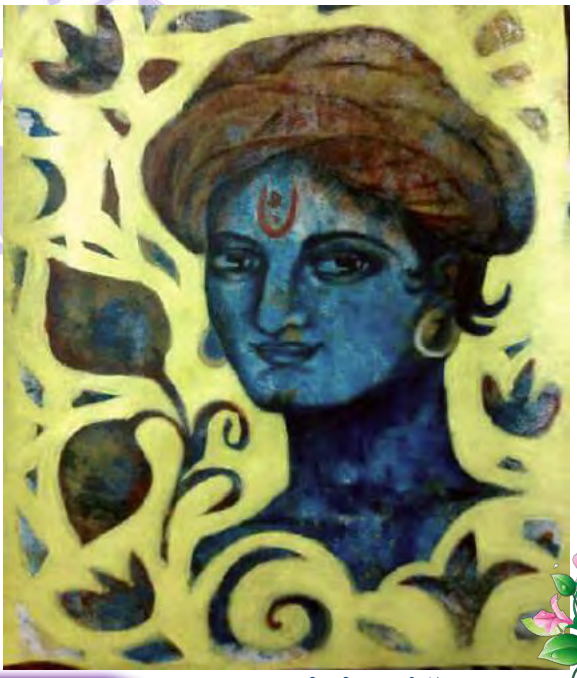

छायांकन : श्रीमती सुपर्णा रॉय

बचपन सबसे सुन्दर

शुचि प्रतिदिन की तरह खेतों में तितलियों से खेल रही थी। अपने छोटे-छोटे उंगलियों से उसे उड़ा रही थी। उसके पिताजी भी उस समय खेतों में काम कर रहे थे। उस बहुत - बड़े मैदान में एक लम्बे पेड़ के नीचे कुछ चमक रहा था। एक हिरण, सुनहरी बिन्दी पूरे बदन पे छायी हुई, ठिठक कर देख रही थी। अचानक शुचि की नजर उस हिरण पर पड़ी। वह खेतों को पीछे छोड़ मैदान की ओर बढ़ती गयी और अपने पिताजी से पूछा –

शुचि : पिताजी वह क्या है ?

पिताजी : बेटी वह एक हिरण है, एक स्वर्ण हिरण । प्रतिदिन वह एक ही जगह पर देखने को मिलता है। फिर कुछ देर बाद दौड़ कर न जाने कहां भाग जाता है। गांव के बहुत सारे लोगों ने उसे देखा है। उस हिरण को पकड़ने के लिए कई लोग खेतों को पार कर उस मैदान की ओर जाते भी हैं परंतु वह हिरण किसी की भी पकड़ में नहीं आता।

शुचि : मैं अवश्य ही उस हिरण को पकड़ लूंगी। चलिए पिताजी, उस हिरण के पास। मुझे उससे खेलना है।

शुचि अपने पिताजी का हाथ खींचती हुई उस हिरण की ओर भागी। खेतों को पीछे छोड़ मैदान को पार कर गयी। जितनी वह भागती, उतनी ही तेज हिरण भी भागता। भागते-भागते वह इतनी आगे निकल गई कि वहां पर न कोई पेड़-पौधे थे, न कोई खेत और न ही कोई मैदान थे।

अब तो हिरण भी नहीं दिखाई दे रही थी। दिखाई दे रही थी तो सिर्फ पत्थरों की ऊंची-ऊंची दीवारें। वह बहुत भयभीत हो गयी और चीखती हुई अपने पिताजी से पूछने लगी-

शुचि : पिताजी मेरी तितलियां कहां गयी ? मुझे तितलियों से खेलना है। वह बहुत प्यारी थी पिताजी। अब मैं किससे खेलूंगी पिताजी। मेरी तितलियां ..... मेरी तितलियां .....

छायांकन : श्रीमती सुपर्णा रॉय

अचानक सुचित्रा की आंखें खुली। उसने अपने आप को बिस्तर पर पसीने से लथपथ पाया। उसकी सांसे तेज हो गयी थी। थोड़ी सी सम्भल जाने के बाद सुचित्रा ने अपनी बच्ची पर नजर डाली। बच्ची एक झूले में शांत से सो रही थी। बिल्कुल एक फूल की तरह। खिड़की से बाहर देखा तो बागों में बहुत सारी तितलियां मंडरा रही थी।

सुचित्रा यह देखकर मन-ही-मन मुस्कुराई और सोचने लगी कि कभी-कभी हम कुछ बड़ी खुशियों को पाने के लिए न जाने कितनी छोटी-छोटी खुशियों को अनदेखा कर देते हैं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ हम इतने उच्चाभिलाषी बन जाते हैं कि हमारी बचपन भी हमसे रूठ जाती है। लेकिन हम बचपन को और उस समय बिताए हुए छोटी-छोटी यादों को कभी नहीं भूलते। क्योंकि बचपन हर इंसान के जीवन में सबसे सुनहरा और सबसे कीमती वक्त होता है।

--श्रीमती सुपर्णा रॉय

अवर श्रेणी लिपिक

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16

दूरभाष- 9874639077

ई-मेल : suparna.roy.soi@gov.in

दिन की शुरुआत

हर इंसान अपने दिन की शुरुआत एक सोच के साथ करता है, लेकिन अगर आप अपना दिन सकारात्मक सोच के साथ शुरू करें तो, यकीनन वह बहुत खुशगवार रहेगा।

- सुबह के वक्त सिर्फ अच्छी बातें सोचें। उनलोगों के बारे में सोचें जो आपको खुशी देते हैं।
- योग या मेडिटेशन करें। मूड को अच्छा रखने में ये दोनों ही बहुत मदद करते हैं।
- पौष्टिक नाश्ता करें और दिन भर तरोताजा होकर कार्य करें।
- घर से निकलने से पहले ठान लीजिए कि आज लौटने से पहले एक अच्छा काम जरूर करना है। कुछ नहीं तो किसी की मदद तो करनी ही है।

--श्री बी. के. सोनपरोते

कार्यालय अधीक्षक

सम्पर्क सूत्र:

महाराष्ट्र एवं गोआ जीडीसी

फूले नगर, पुणे-411006

हिंदी भाषा राष्ट्र की अभिव्यक्ति

मनुष्य को अपने हार्दिक विचारों एवं मन की भावनाओं को किसी दुसरे पर व्यक्त करने के लिए तीन शैलियों कि जरूरत पड़ती है, जैसे कि संकेत से, बोल कर एवं लिखकर। इशारों से एवं बोल कर मन कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए मनुष्य को आमने-सामने रहना पड़ता है। जो व्यक्ति बोल सकते है वे संसार तथा अपनी जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते है। संसार को वश में कर लेने का यह एक अमोघ मंत्र है। राजनीति में नेतागण और समाज में साधू-संत अपने भाषण एवं प्रवचनों से लाखों लोगों के दिल में जगह बना लेते है। यह सभी संभव है जो व्यक्ति अपने राज्य व अपने अंचल में रहते और काम करते है। परन्तु अगर कोई व्यक्ति, नेता अथवा साधू-संत अपने राज्य छोड़ कर अपने विचारों एवं मन कि भावनाओ को अन्य राज्य में फैलाना चाहें तो उनको एक अंतर-राज्यीय भाषा जानना जरुरी है, जो सभी जगह प्रचलित हो। जैसे हमारे भारतवर्ष में राष्ट्रीय भाषा है हिंदी, अगर कोई व्यक्ति ऐसे सोच लेते है कि मुझे सिर्फ अपने राज्य की भाषा जानने से काम चल सकता है तो वे गलत है, क्योंकि तब आप सिर्फ अपने अंचल और राज्य में ही अपने विचारों एवं भावनाओं को व्यक्त कर सकते है, पूरे देश में नहीं। किसी दूसरे राज्य में आपको कोई दोस्त को पत्र लिखना हो तो आपको हिंदी में लिखना पड़ेगा । अर्थात हमारे देश की संगति, प्रगति को आगे ले जाने के लिए राष्ट्रीय भाषा को अपनाना अनिवार्य है । एक देश एक भाषा यह संकल्प हम सबको लेना चाहिए सिर्फ हमारे लिए नहीं आनेवाले पीढ़ियों के लिए यह अत्यंत जरुरी है । हमारे देश के गृह मंत्रालय ने राज भाषा हिंदी के प्रशिक्षण के लिए विभिन्न सरकारी / स्वायत्तशासी कार्यालयों में पाठ्यक्रम का आयोजन किया है। इसके उपरांत पाठ्यक्रम पास करने पर नकद पुरस्कार का भी प्रावधान किया गया है। लेकिन वास्तव में देखा गया की अनेक कर्मचारी / अधिकारी इस पाठ्यक्रम पास एवं पुरस्कार लेने का बाद भी कार्यालय में इंग्लिश में ही काम करते है, जो की राजभाषा की मर्यादा की अवज्ञा है । कुछ अधिकारी ऐसे भी पाए गये जो कभी-कभी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को कहते है कि आपका इंग्लिश अच्छा नहीं है, जो हिंदी भाषा के प्रोत्साहन के विरुद्ध है । लेकिन सरकारी कार्यालय में ऐसे भी कुछ अधिकारी है जो अंग्रेजी में भरपूर ज्ञान होने पर भी अंग्रेजी का जवाब हिंदी, राजभाषा में देंते है, हमें उन पर नाज है । वे सच्चा देशप्रेमी हैं। साथियों अंत में मैं सिर्फ इतना ही कहूँगा कि यदि कोई आपको यह कहता है की आप इंग्लिश नहीं जानते तो इसमें लज्जा नहीं आनी चाहिए, क्योंकि यह हमारी भाषा नहीं है।

उसके स्थान पर यदि आपको हिन्दी नहीं आती जो कि राष्ट्रभाषा है तो अवश्य लज्जा का अनुभव करना चाहिए। अंग्रेजी तो इंग्लैण्ड में एक अनपढ भी बोल लेता है, उसमें कौन-सी महानता है। अत: अपनी मातृभाषा/राजभाषा को सम्मान दें और ऐसा कहने वाले को आप एक बात अवश्य कहें “That English is nobody’s language that is their discredit who can’t understand you, I may or may not speak or write in English but I should learn to read, write and speak in Hindi”.

इसमें आपको इंग्लिश ठीक से नहीं जानने के लज्जा बोध से मुक्ति मिलेगा और हिंदी सीखने की हिम्मत भी मिलेगी। अगर आप हिंदी भाषा में पारंगत हैं, तो सम्पूर्ण देश को एकसूत्र में पिरोये रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं और यह भावना आपको गौरवान्वित करेगा। जय हिन्द, जय भारत, जय हिंदी ।

याद रखे बांग्लादेश में एक भाषा, चीन में एक भाषा, जापान में भी एक भाषा परन्तु भारत में भिन्न भाषा हैं। यह हमारे लिए गौरव की बात है, परंतु इन सभी भिन्न-भिन्न भाषाओं के बीच सेतु का कार्य हमारी प्यारी राष्ट्रभाषा हिन्दी बखूबी कर सकती है। इसके लिए हम किसी विदेशी भाषा का सहारा क्यूं लें, कृपया विचार करें .....

--श्री अनिरुद्ध बासु
सहायक

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16
दूरभाष- 9088016240
ई-मेल : aniruddha.soi@gov.in

निज भाषा उन्नति अहै,
सब भाषा को मूल ।
बिनु निज भाषा ज्ञान के ,
मिटै न हिय को शूल ।।

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

बबलू की समझदारी

बबलू एक बहुत ही समझदार लड़का था। वह बारह साल का था और कक्षा 7 में पढ़ता था। वह रोज नये-नये खेलों के बारे में सोचता रहता था और इसी कारण वह अपने मोहल्ले का हीरो था। उसके पिता अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पुलिस अधिकारी थे। एक दिन जब बबलू के पिताजी घर वापस आए, तो वे बहुत उदास और परेशान थे। बबलू ने जब उनके चेहरे की तरफ देखा तो समझ गया कि सब कुछ ठीक नहीं है। पापा के पास जाकर उसने पूछा – पापा क्या बात है, आज आप बहुत परेशान लग रहे हैं। पापा ने कहा – हां बेटा आज मैं बहुत दु:खी हूं। 15 वर्ष में पहली बार आज मैं एक ऐसे आदमी से मिला जो 10 घण्टे की पूछताछ के बाद भी एक शब्द नहीं बोला। पापा की बात सुनकर बबलू बोला, 'आप किसके बारे में बात कर रहे हैं पापा ? कौन है जो एक शब्द नहीं बोल रहा है ?'

छायांकन : श्रीमती सुपर्णा रॉय

'बबलू, आज हमें सूचना मिली कि अंतर्राष्ट्रीय फ्लाईट से एक आदमी अवैध तरीके से कुछ हीरे लेकर भारत आ रहा है। हमलोगों ने उसे हवाई अड्डे पर पकड़ लिया। उसकी पूरी जांच की गई, लेकिन एक भी हीरा नहीं मिला। हमने कई तरह से उससे पूछने की कोशिश की लेकिन उसने कुछ भी नहीं बताया'- पापा थककर बैठते हुए बोले। इसका मतलब कहीं आपको मिली सूचना झूठी तो नहीं थी, बबलू बोला। बबलू की बात सुनकर पापा ने कहा – नहीं बेटे, मिली सूचना बिल्कुल सही थी और हमने उसी दाढ़ी वाले व्यक्ति को ही पकड़ा था, जिसके बारे में हमें सूचना मिली थी।

क्या आपने हीरे की खोज के लिए उस व्यक्ति की दाढ़ी में कंघी फेर कर देखी थी ? बबलू ने हंसते हुए पूछा। तुम्हारा क्या मतलब है, बबलू- पापा ने थके स्वर में पूछा। पापा आप ने हिन्दी का मुहावरा नहीं पढ़ा कि 'चोर की दाढ़ी में तिनका' इसलिए मैं कह रहा हूं कि एक बार आप उसकी दाढ़ी में तलाश कर देख सकते हैं। बबलू की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि पापा तेजी से बाहर निकल गए। 2 घण्टे बाद जब पापा लौटे तो बहुत खुश थे। बबलू ने पापा से पूछा, 'पापा आप बहुत खुश दिखाई दे रहे हैं, क्या आपकी परेशानी दूर हो गयी ?' हां बेटे, तुम्हें बहुत धन्यवाद, आज तुम्हारी वजह से चोर रंगे हाथों पकड़ा गया। पापा के चेहरे से निश्चिंतता के भाव झलक रहे थे। इसका मतलब हीरे मिल गये। कृपया बताएं कि हीरे कहां थे ? हीरे वहीं थे जहां तुमने बताये थे, पापा मुस्कुराते हुए बोले। यानी उस व्यक्ति की दाढ़ी में, बबलू विस्मित होकर बोला।

हां बेटे, उस स्मगलर ने हीरे धागों में बांधकर चेन बनाई हुई थी और उसे लम्बी दाढ़ी में छुपा कर रखा था।

बबलू ने उछलते हुए कहा, तब तो मुझे पुरस्कार मिलना चाहिए। मैंने चोर को पकड़ने में आपकी मदद की है।

हां बिल्कुल, मैं तुम्हें पुरस्कार जरूर दूंगा, पापा ने बबलू को गले से लगाते हुए कहा।

--श्री बिश्वनाथ नाग

सहायक

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16

ई-मेल : biswa.nag.soi@gov.in

'यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है'।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

कहाँ खो गया वो बचपन

स्वप्निल नैन निहारत रे मन,
कहाँ खो गया वो बचपन
वो बचपन जो बेफ़िकरा
सर्वत्र प्रेम बिखरा बिखरा

करम धरम का भान नहीं
मन मे कोई गुमान नहीं
बन पंछी उड़ता रहता
परीलोक जाकर बसता

सब से प्रीत सभी कोई मीता
सुंदर सहज भाव नहीं रीता
सहज प्रेम घट भीतर था
तन हो न, मन निर्मल था

निर्मल घट में राम थे बसते
हल्की सी मुस्कान से सजते

छायांकन : श्रीमती सुपर्णा रॉय

शुभेश कितनी सहज कितनी सुन्दर,
वो दुनिया थी अधिकार कर्तव्य से जुदा जुदा।
मन्दिर-मस्जिद मन में नहीं
एक ही लेखे राम खुदा।।

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सम्पर्क सूत्र:

मकान संख्या-144, ब्लॉक-जी 7
केन्द्रीय सरकार आवासन, नारकेलडांगा
फूलबागान, कोलकाता-700054
दूरभाष- 90186 28222
ई-मेल : shubhesh.soi@gov.in

पानी

प्यास से गला सूख रहा था, परंतु कहीं पानी नजर नहीं आ रहा था। मैंने घर के सारे बोतल, डब्बे यहां तक कि किचन के सारे बरतन को कई बार उलट-पलट कर देख लिया लेकिन पानी की एक बूंद भी नहीं मिली। मैं प्यास से बेचैन होकर छुट्टन के दुकान की ओर भागा। पहुंचते-पहुंचते मैं हांफने लगा था। मैंने पानी की एक बोतल मांगी। उसने लगभग झल्लाते हुए बोला- अरे भाई नहीं है पानी। सुबह से एक ही बात बोल-बोलकर थक गया हूं। भाई पानी की बोतल की सप्लाई नहीं हो रही है। पूरे दस दिन से मैंने पानी की एक बोतल भी नहीं बेची। हम जैसों के नसीब में ऐसी अनमोल चीजें कहां। मैं बदहवास सा चीख पड़ा। क्या मतलब, पानी नहीं है। प्यास के मारे मैं मरा जा रहा हूं और जब मैं पानी खरीदने आया हूं तो तुम भी नहीं दे रहे हो। क्या हो गया है, अब मैं कहां से पानी लाऊं। छुट्टन ने समझाते हुए कहा- भाया पीने के पानी की बहुत मार मची है। दिन में दो बजे नलकूप विभाग की गाड़ी आती है और सभी घरों के लिए प्रति व्यक्ति एक लीटर के हिसाब से पानी देती है। अब तो उसी का इंतजार करना पड़ेगा, कोई और चारा नहीं है। मैंने उसकी ओर आशा भरी निगाहों से देखा, शायद वो अपने लिए रखे पानी में से थोड़ा मुझे भी पिला दे। पर उसने दो-टूक लहजे में कह दिया- और चाहे जो कुछ मांग लो परंतु पानी नहीं। 2 बजे से पहले पानी नहीं मिलेगा और मैंने एक गिलास पानी अपने बेटे के लिए बचा कर रखा है जो प्यासा स्कूल से लौटेगा तब उसे दूंगा।

मैं हताश-निराश वापस घर की ओर लौट पड़ा। अब दो बजे तक इंतजार करने के सिवाय कोई चारा नहीं था। परंतु अभी तो केवल 10 ही बजे थे। चार घण्टे तक मैं प्यास से तड़पता रहूंगा। हाय ये क्या हो गया है। बेसिन में लगा नल मुझे देख मुंह चिढा रहा था, मानो मन ही मन मुझे कोस रहा हो – और पानी करो बर्बाद। ब्रश करते समय और सेविंग करते समय नल खुला छोड़कर जाने कितने लीटर पानी बर्बाद कर दिये अब भुगतो। बाथरूम में लगा झरना तो मानो मेरी बेबसी पर अट्टहास लगा रहा था- घंटों तक झरने के नीचे नहाने का आनंद लेते समय तनिक भी भान नहीं रहा कि कितना पानी व्यर्थ जा रहा। वहीं गमले में लगे फूलों की सूखी डंठल और आंगन में लगभग ठूंठ हो चुका आम और कटहल के पेड़ मेरी दशा पर मानो तरस खाते हुए बोल रहे थे – इतने व्यर्थ पानी बर्बाद करने के स्थान पर यदि हमें सींचा होता और छोटे-छोटे पौधों की सेवा की होती तो आज ये नौबत न आती।

पूरे कॉलोनी में कहीं हरे-भरे पेड़ नहीं थे। कहीं-कहीं सूखे तने दिखलाई पड़ रहे थे। तभी बाहर कोलाहल सुनाई पड़ा। लोगों की भीड़ लगी थी, पानी वाली गाड़ी आ गई थी। लोग लाईन लगा रहे थे। मैं भी भागा-भागा गया और विनती की, कि पहले मुझे पानी दें मैं बहुत प्यासा हूं। पानी बांटने वाले ने बोला- ठीक है अपना वाटर कार्ड निकालो। अब ये क्या बला है? कौन-सा वाटर कार्ड। हे भगवान अभी तक आपने वाटर कार्ड नहीं बनवाया, फिर तो मैं कुछ भी नहीं कर सकता। सरकार ने पानी के ब्लैक मार्केटिंग रोकने के लिए सबको वाटर कार्ड जारी किया है, बिना उसके पानी नहीं मिलेगा। पानी देने वाला कर्मचारी यह कहकर दूसरों को पानी देने में व्यस्त हो गया। मैं प्यास के मारे पागल हुआ जा रहा था। मेरे आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा। मैं हाथ जोड़कर भगवान से विनती करने लगा- हे भगवान, अब तेरा ही आसरा है। अब तुम ही मेरे प्राणों की रक्षा कर सकते हो। तभी मेरे जीभ पर पानी की कुछ बूंदे पड़ी। मानों भगवान ने मेरी प्रार्थना से द्रवित होकर बादल को बारिश करने भेज दिया हो।

फिर आंखों पर पानी की कुछ बूंदें पड़ी। साथ में पत्नी का स्वर सुनाई पड़ा। कब तक सोते रहोगे ऑफिस नहीं जाना क्या। मैं आंख मलते हुए उठ बैठा। तो मैं सपना देख रहा था। कितना भयानक सपना था। लेकिन इस सपने को सच होते देर नहीं लगेगी यदि समय रहते हम पानी और वनों का महत्व नहीं समझेंगे। इसलिए पेड़ लगायें और पर्यावरण को बचायें जिससे आपकी अगली पीढ़ी को इस सपने से रूबरू न होना पड़े।

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सम्पर्क सूत्र:

मकान संख्या-144, ब्लॉक-जी 7
केन्द्रीय सरकार आवासन, नारकेलडांगा
फूलबागान, कोलकाता-700054
दूरभाष- 90186 28222
ई-मेल : shubhesh.soi@gov.in

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद

डिजिटलीकरण से फायदा

सरकार द्वारा नागरिकों को सामाजिक सेवाएं प्रदान करना हो या साधारण दैनिक जिंदगी की बात हो, प्रत्येक क्षेत्र में यह प्रक्रिया अपनायी जा रही है। देश में आम आदमी के लिए सरकारी सुविधाओं का उपयोग एवं प्राप्त करना आसान हो गया है । सबसे बड़ी बात है मानवीय हस्तक्षेप के तमाम तरीके खत्म हो रहे है। डिजिटल तकनीक के उपयोग से शासन प्रणाली में काफी सुधार हो रहा है। डिजिटल इण्डिया अभियान के अन्तर्गत शासन प्रणाली को बदलने के लिए ई गवर्नेंस के नारे के साथ सरकार पूर्ण रूप से नजर रखी हुई है।

सरकारी योजनाओं को प्रभावकारी बनाने के लिए बायोमेट्रिक पहचान सिस्टम के उपयोग से कई क्षेत्रों से फर्जी उपभोक्ताओं पर अंकुश लग रहा है । बैकों में बायोमेट्रिक का इस्तेमाल कर मिनटों में खाता खुल जाना एक नई क्रांति है।

सार्वजनिक वित्त और सार्वजनिक खरीदारी विषय भी डिजिटल माध्यम से आगे बढ रहे है। सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पी एफ एम एस) के जरिये वित्तीय प्रबंधन प्लेटफार्म बनाना संम्भव हुआ है। बेहतर प्रबंधन के अंतगत पीएफएमएस के कारण फंडों को समय पर जारी किए जा रहे है ।

साधारण तौर पर प्रयोग की जाने वाली और कम मूल्य की वस्तुओं और सेवाओं के एकल खिड़की ऑनलाइन खरीदारी प्रणाली के तहत वर्ष 2016 में गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM) को शुरु किया गया। केन्द्रीय सार्वजनिक खरीदारी पोर्टल उच्च मूल्य के आइटम (दो लाख या इससे अधिक) को ई-खरीदारी की सुविधा उपलब्ध है। जीईएम सीधी खरीदारी, ई-बिडिंग, उल्टी ई-निलामी सरकारी यूजर्स के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की सुविधाएँ देने के अलावे उत्पाद बिक्रीकर्ताओं और सेवा प्रदाताओं के लिए गुंजाइश उपलब्ध करने में सक्षम है। साथ ही सरकारी खरीद के लिए मार्केट प्लेस उपलब्ध कराता है। प्रत्यक्षकरों के संग्रह की प्रणाली के डिजिटलीकरण से आयकर रिटर्न में बढोतरी हुई है। वस्तु और सेवा कर (जी एस टी) को लागू किए जाने से अप्रत्यक्ष करदाताओ की संख्या में बढ़ोतरी हुई।

प्रधानमंत्री ने वीडियो कांफ्रेंस के जरिये परियोजनाओं पर तेजी से काम सुनिश्चित करने के बीच में आनेवाली अड़चनो को समाप्त किया है। डिजिटलीकरण अभूतपूर्व स्तर पर पहुंच गया है और इसे औद्योगिक क्रांति का नाम दिया जा रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी बड़े पैमाने पर इसके प्रयोग होने से आम जनमानस को बिना परेशानी के चिकित्सा सम्वन्धी जानकारियां उपलब्ध हो रही है।

--श्री अरिन कुमार दत्ता
प्रबन्धक(कनिष्ठ)

सम्पर्क सूत्र:

14, वुड स्ट्रीट
पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता-16
ई-मेल : akdutta.soi@gov.in

जलेबी की तरह सीधी बातें

आज का युग प्रगतिशीलता का युग है। हर ओर विकास हो रहा है। विकास के पैमाने का भी विकास हो रहा है। पहले भूखमरी के आंकड़ों से विकास का आकलन किया जाता था। अमुक वर्ष में भूख से मरने वालों की संख्या इतनी थी जो पिछले वर्ष घटकर इतनी हो गयी है। अर्थात हम विकास कर रहे हैं। परंतु, आज का दौर तो डिजिटल क्रांति का है। अतएव, भुखमरी के डाटा का स्थान डिजिटल डाटा ने ले लिया है। जीबी और टीबी पैमाने ने विकास को बूलेट ट्रेन की रफ्तार दी है। घबरायें नहीं मैं वो खांसने वाले टीबी की नहीं गीगाबाइट-टेराबाईट की बात कर रहा हूं। हमारे कम्प्यूटर के शिक्षक पढाते थे कि सब कुछ 0 और 1 का कमाल है। वो बायनरी सिस्टम (द्विआधारी सिस्टम) की बात कर रहे थे।

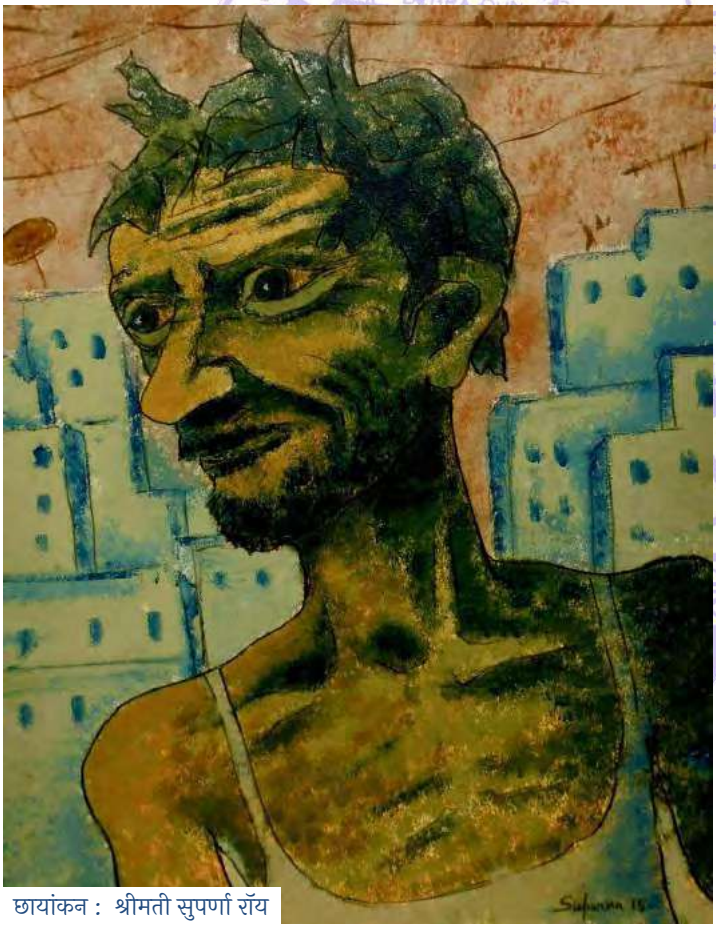

छायांकन : श्रीमती सुपर्णा रॉय

इस डिजिटल दौर में बस 0 और 1 ही है। कोई दूसरा स्थान पर नहीं रहना चाहता है। सभी 1 नम्बर पर रहेंगे नहीं तो 0 नम्बर, मतलब कुछ नहीं। रेस लगी है भागने की और सभी भाग रहे हैं 'एक' नम्बर के पीछे। डर है कि वो कहीं 0 न रह जाएं। अब इस भागम भाग में किसे पड़ी है पूछने की, कि विकास के इस बूलेट रफ्तार में क्या पीछे रह गया है। बूलेट ट्रेनों को अपने देश में लाने में प्रयासरत सरकार को लोकल व एक्सप्रेस ट्रेनों में बोरियों की तरह लदकर जा रहे यात्रियों की कितनी चिंता है। सभी ट्रेन लेट चलें, हम भेड़-बकरियों की तरह यात्रा करें, हमें क्या। गेटमैन के अभाव में मानवरहित रेल फाटकों पर दुर्घटनाएं होती हो तो हों, हमें क्या। हम तो बूलेट ट्रेन की बात करेंगे और खुशफहमी में जी लेंगे कि अब हम भी जापान से टक्कर लेंगे।

अट्टालिकाओं की गगनचुम्बी श्रृंखला और नीचे दम तोड़ता किसान। अभी भी भूख से मर रहें हैं लोग और किसान अपने लागत मुल्य तक के अभाव में अपनी ही ऊपजाई फसलों को वापस अपनी ही खेतों में दफन करने को मजबूर है। परंतु हमें क्या, हम तो फ्री डाटा को ही विकास से तौलेंगे। सब सोशल नेटवर्किंग में और अपना नेटवर्क बढा रहे हैं। समय कहाँ है, किसके पास है। सब तो व्यस्त है।

अफीम से भी गहरा नशा दिया जा चुका है, सभी मस्त हैं। तभी तो जब सरकार घोषणा करती है कि देखो विकास हुआ है और कुछेक करोड़ की ऋण सहायता और कुछेक लाख को आवास सहायता का अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाती है। तो सब ताली बजाते हैं। पर ये तो बताएं कि आबादी तो एक अरब के पार हो गयी है, वहां ये कुछ करोड़ के क्या मायने हैं। पर कौन पूछे, सभी मस्त हैं। मुझे तो जलेबी बहुत भाती है क्योंकि वो इतनी सीधी होती है कि एक सिरा को पकड़ो और दूसरे सिरा से विकास को माप लो। मैंने भी ठान ली है कि विकास की पूरी खबर लेकर रहूंगा। कुछ दोस्तों ने भीतर की खबर निकाल कर दी है कि विकास के आने की तिथि 30 फरवरी है और ये पक्की खबर है। अब देखिये कब आती है वो तिथि। पर किसे इंतजार है, सब तो राम-रहीम, मंदिर-मस्जिद, 3जी-4जी में व्यस्त हैं और मैं ! मैं तो जलेबी पाकर ही मस्त हूं।

जय श्री हरि

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट, भारतीय सर्वेक्षण विभाग
कोलकाता-700016
दूरभाष- 90186 28222
ई-मेल : shubhesh.soi@gov.in

हमारी नागरी लिपी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी है।

- राहुल सांकृत्यायन

'हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है'।

- महात्मा गांधी

हावड़ा पुल – महत्वपूर्ण तथ्य

हावड़ा पुल हुगली नदी पर बना एक बहुत ही मशहूर पुल है जो पश्चिम बंगाल के दो बड़े शहरों हावड़ा और कोलकाता को जोड़ता है यह कोलकाता की संस्कृति का प्रतीक बन चुका है। यह दुनिया का सबसे व्यस्त पुल है। यह सेतु 2313 फीट लम्बा, 269 फीट ऊँचा 71 फीट चौड़ा है जिसमें दोनों तरफ 15-15 फीट के दो फूटपाथ भी है। यह पुल 73 साल पुराना है । इसे बनने में लगभग 6 साल लगे। 3 फरवरी 1943 में इसका इस्तेमाल शुरू हुआ जो आज तक जारी है। हावड़ा पुल पर रोज 1 लाख से भी ज्यादा गाड़ियां गुजरती हैं और 1.5 लाख पैदल यात्री इस पर चलते हैं इसकी क्षमता 6000 टन वजन सहने कि है, इसे बनाने में 26500 टन स्टील खर्च हुई थी जिसमे 87% टाटा स्टील कम्पनी द्वारा खरीदा गया था। शुरुआत में इसका नाम न्यू हावड़ा ब्रिज था। 14 जून 1965 में बंगला साहित्य के महान कवि रबिन्द्रनाथ ठाकुर के सम्मान में इसका नाम बदलकर रविन्द्र सेतु कर दिया गया। 2000 फीट से भी अधिक लम्बे इस पुल में सिर्फ दो ही स्तम्भ है जिसके बीच की लम्बाई 1500 फीट है इसे बनाने में उस वक्त 2 करोड़ 50 लाख की खर्च हुई थी। गर्मियों के दिन में इसकी लम्बाई करीब 3 फीट तक बढ़ जाती है। यह एक बेहतरीन मिसाल है क्योंकि इतने बड़े पुल में एक भी नट बोल्ट नहीं है।

--श्री भास्कर नस्कर
प्र०श्रे०लिपिक
14, वुड स्ट्रीट, पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता-16

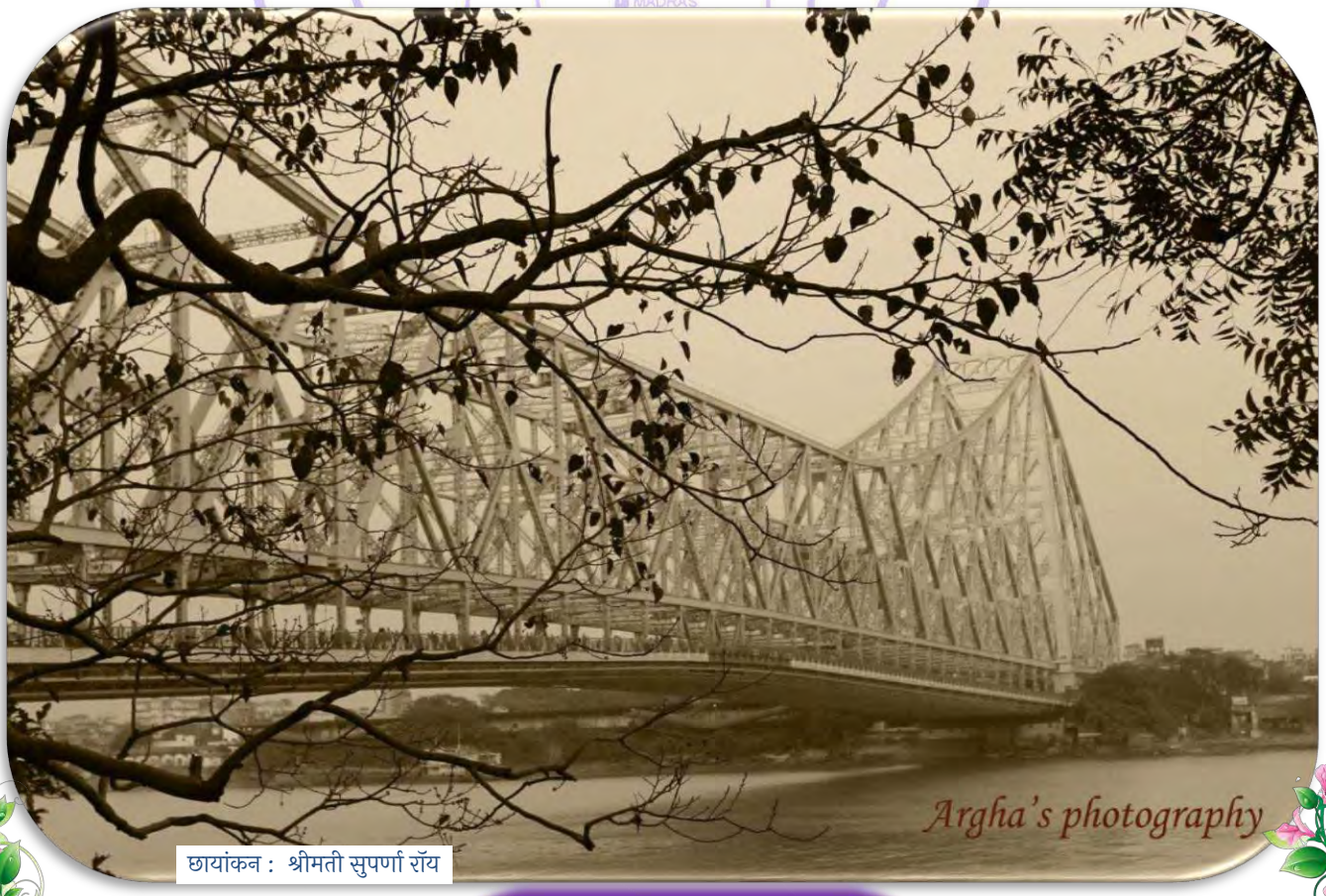

छायांकन : श्रीमती सुपर्णा रॉय

खूबसूरत यादें

हमारे सेवाकाल से जुड़े फील्ड जीवन की कुछ ऐसी कहानियां हैं जो यूं तो बहुत छोटी है लेकिन लंबे दिनों तक मेरे मन में छाप छोड़ गई है। उसी में से दो-तीन कहानियां आपलोगों को प्रस्तुत है-

(1)

नौकरी के शुरुआत मे 4 साल लगातार मैं महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में काम कर चुका हूं। एक दिन मैं कर्नाटक के एक गांव में काम करने के लिए गया था अचानक मेरा जूता टूट गया। उसे ठीक करने के लिए मैं मोची के दुकान में पहुंचा। साफ-सुथरे दुकान में एक 30 साल का लड़का नया जूता बना रहा था। वह जहां बैठकर काम कर रहा था उसके पीछे एक बहुत बड़े स्वामी जी का फोटो लगा हुआ था। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि इतने छोटे से गांव में स्वामी जी का इतना बड़ा फोटो कहां से आया। मैंने मन की बात उससे पूछ ही लिया। वह बोला यह जो आदमी हैं हमारे छोटे जात का भगवान है और उन्होंने हमारे लिए जो भी काम किया उसके जैसे कोई अभी तक किया नहीं। इसलिए मैंने उसको पैर के नीचे बैठ कर काम करना चाहता हूं। बहुत ही सिंपल सा उत्तर था यह लेकिन उसका जो सच मैंने देखा वह मैं जिंदगी में कभी भूल नहीं सकता।

(2)

आख़िर में मैं अब रोको पास की एक छोटी-सी कहानी बताते है। उस पार मैंने एक बहुत ही अंदर वाले गांव में कैंप लगाया था। एक दिन सुबह मैं गांव में टहलने के लिए निकला। मुझे एक खुले मैदान में एक छोटा सा मकान दिखाई दिया। दूर से वह मकान बहुत अच्छा लग रहा था। यह मकान किसका है यह देखने के लिए मैं वहां पहुंचा। वहां पहुंचने के बाद मैं जब आवाज दिया तो घर से एक सज्जन व्यक्ति निकले। मुझे देखते हुए उन्होंने मुझे घर में बुलाया। अंदर जाने का बाद मैं आश्चर्यचकित हो गया था। घर आधुनिक सामानों से भरा हुआ था। बातों-बातों में पता चला कि वह व्यक्ति केमिकल इंजीनियर हैं। बेंगलुरु से इंजीनियरिंग पास करने के बाद उसको अच्छा सा नौकरी मिला था। लेकिन उसके मन में कुछ अलग ही चिंता थी। वह अपने गांव के विकास के लिए नौकरी छोड़कर गांव में लौट आया। लौटकर अपने तकनीकी ज्ञान का सही प्रयोग कर गांव में डीप इरीगेशन सिस्टम स्थापित किया और बेर और अंगूर की खेती की शुरुआत की। इस काम में सहयोग देने के लिए उसने अपने गांव के बेरोजगार लोगों को लगाया। तैयार फलों को वह बेंगलुरु और हैदराबाद तक सप्लाइ करता था। इससे उसके विकास के साथ ही गांव के लोगों की बेरोजगारी की समस्या भी दूर हुई और गांव का विकास भी हुआ। आज अपने गांव के बारे में इतना अच्छा सोचना और उसके लिए अपना सुनिश्चित भविष्य का त्याग करने वाला आदमी बहुत ही कम मिलता है। यह सब घटना आज से कम-से-कम 20 साल पहले का पुरानी है लेकिन अभी तक मेरे मन में बसा है।

--श्री रूप कुमार दास
अधिकारी सर्वेक्षक

सम्पर्क सूत्र:
13, वुड स्ट्रीट, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16
ई-मेल : rupdas.soi@gov.in

नेताजी

एक नेता ने एक गधे से पूछा कहते हुए श्रीमान् जी
आप हिन्दू हैं या मुसलमान जी
इतना सुनते हीं गधे का स्वाभिमान जागा
उसने उलटा नेता से सवाल दागा
पहले ये बतायें मेरे बाप
गधे मैं हूं या आप
अगर हम न होते, इलेक्शन न होता
गधों का कभी भी सलेक्शन न होता
मुसीबत में सबने हमें बाप बोला
न चाहते हुए भी हमें आप बोला
अगर हम ने होते, तुम्हारा क्या होता
इलेक्शन का सोचो नजारा क्या होता
हमारे बल से ही तुम नेता बने हो
गधे के वोटों से ही विजेता बने हो
राजनीति में नहीं है नीति कोई
नहीं है द्वेष भाव और प्रीति कोई
बैरियों के भी जज्बात मिल जायेंगे
मतलब हों तो दिन-रात मिल जायेंगे
बिना मतलब कोई काम होता नहीं,
हर कदम पर नमूने मिल जायेंगे।
सांप-नेवले की दोस्ती यहां
कदम-दर-कदम तुमको दिख जायेंगे।

--के.पी. मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16
ई-मेल : kali.mishra.soi@gov.in

संत कबीर के विचार -आज कितने प्रासंगिक

भारत की पावन वसुंधरा अनेकों महान साधु - संतों की जननी रही है, जिन्होंने अपने पावन जीवन-दर्शन से भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को लाभान्वित किया है। ऐसे ही संतों की श्रेणी में अग्रणी नाम परम तेजस्वी संत कबीर का है। इस धरा-धाम पर संत कबीर का पदार्पण ऐसे समय में हुआ जब एक ओर तो भारतीय जनमानस हिन्दू धर्म में गहरी पैठ बना चुके आडम्बरों व कुप्रथाओं से लड़ रहा था, वहीं दूसरी ओर आततायी लोदी शासकों के अन्याय और जबरन धर्म-परिवर्तन का शिकार हो रहा था।

विभिन्न विद्वानों-इतिहासकारों के अनुसार संत कबीर का जन्मकाल 1398 ई. के आस-पास था। वे सैय्यद और लोदी शासकों के समकालीन थे। संत कबीर के जन्म के सम्बंध में कबीर-पंथियों में एक दोहा प्रचलित है-

चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाठ ठए ।
ज्येष्ठ सुदी बरसाईत को, पूरनमासी प्रकट भए ।।

अर्थात् संत कबीर का प्राकट्य काल विक्रमी संवत 1455 संवत ज्येष्ठ मास के पुर्णिमा के दिन हुआ था। कबीर ने सदैव दया और प्रेम जैसी मानवतावादी भावों को अपने विचारों में अधिक स्थान दिया है-

दया राखि धरम को पाले, जग से रहे उदासी ।
अपना सा जी सबका जाने, ताहि मिले अविनाशी ।।

जहां दया, तहां धर्म है, जहां लोभ तहां पाप ।
जहां क्रोध तहां काल है, जहां क्षमा वहां आप ।।

जीवन की सत्यता का बोध कराने के लिए उन्होंने प्रभावशाली अभिव्यक्ति दी है जो उनके साखियों में स्पष्टत: परिलक्षित होता है –

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय ।
जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा बुरा न कोय ।।

चुन-चुन तिनका महल बनाया, लोग कहें घर मेरा ।
ना घर मेरा, ना घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा ।।

हाड़ जड़े ज्यों लाकड़ी, केस जड़े जस घास ।
पानी केरा बुलबुला, अस मानुष की जात ।।

पानी ही ते हिम भया, हिम होय गया बिलाय ।
जो कुछ था सोई भया, अब कुछ कहा न जाय ।।

कबीर दिखावटी प्रेम के स्थान पर आंतरिक प्रेम और लौकिक प्रेम के स्थान पर परमात्मा के प्रति निश्छल प्रेम को प्रमुखता देते हैं। उनके अनुसार प्रेम सर्वत्र है –

प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा परजा जेहि रूचै, शीश देइ लै जाय ।।

जब मैं था, तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं ।
प्रेम गली अति सांकरी, ता में दोउ न समाय ।।

बाहर क्या दिखलाइए, अंतर जपिए राम ।
कहां काज संसार से, तुझे धनी से काम ।।

कबीर अपने साखियों में मानव जीवन के यथार्थ से भी परिचय कराते हैं और जीवनरूपी नाव को खेने का ढंग भी सिखलाते हैं–

कबिरा गर्व न कीजिए, कबहुं न हंसिए कोई ।
अजहुं नाव समुद्र में, ना जाने का होई।।

जो तोकूं कांटा बुवै, ताहि बोय तू फूल ।
तोकू फूल के फूल है, वा कू है तिरशूल ।।

निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करे सुभाय ।।

वृक्ष कबहुं न फल भखै, नदी न संचै नीर ।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर ।।

संत कबीर तन की शुद्धता के स्थान पर मन की शुद्धता को अधिक महत्व देते हैं–

नहाए धोय क्या हुआ, ज्यों मन मैल न जाय ।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय ।।

संत कबीर ने धर्म के नाम पर हो रहे आडम्बरों का कड़ा विरोध किया और विभिन्न कुप्रथाओं पर आमजनों की भाषा में ही आघात किया –

पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहाड़ ।
ता से तो चक्की भली, पीस खाय संसार ।।

हिन्दू-तुरूक की एक राह है, सतगुरू इहै बताई ।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तों, राम न कहेउ खुदाई ।।

कबीर दिखावटी स्वांग को त्याग कर निर्मल हृदय से भगवत भजन की सलाह देते हैं –

कबीर जपनी काठ की, क्या दिखलावे मोहि ।
हृदय नाम न जापिहें, यह जपनी क्या होहि ।।

पिया का मारग सुगम है, तेरा भजन अवेड़ा ।
नाच न जानै बापुड़ी, कहता आंगन टेढ़ा ।।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर ।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ।।

वर्तमान समय भी कुछ अलग नहीं है। निरंतर धर्म के नाम पर हो रही हिंसा और अंधविश्वास की भेंट चढ रही मानव जिन्दगियों को देख लगता है कि हमने संत कबीर के विचारों को पूरी तरह विस्मृत कर दिया है। संत कबीर केवल धार्मिक सुधारक ही नहीं थे, उनके विचारों ने समाज को एक नई दिशा दी। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है। उन्होंने मानव को जीवमात्र से प्रेम करना सिखलाया। बाह्य आडम्बरों को सिरे से नकारते हुए सच्चे मन से भगवत भजन की सलाह दी।

ओ३म् ।। शांति: ।। शांति: ।। शांति: ।।

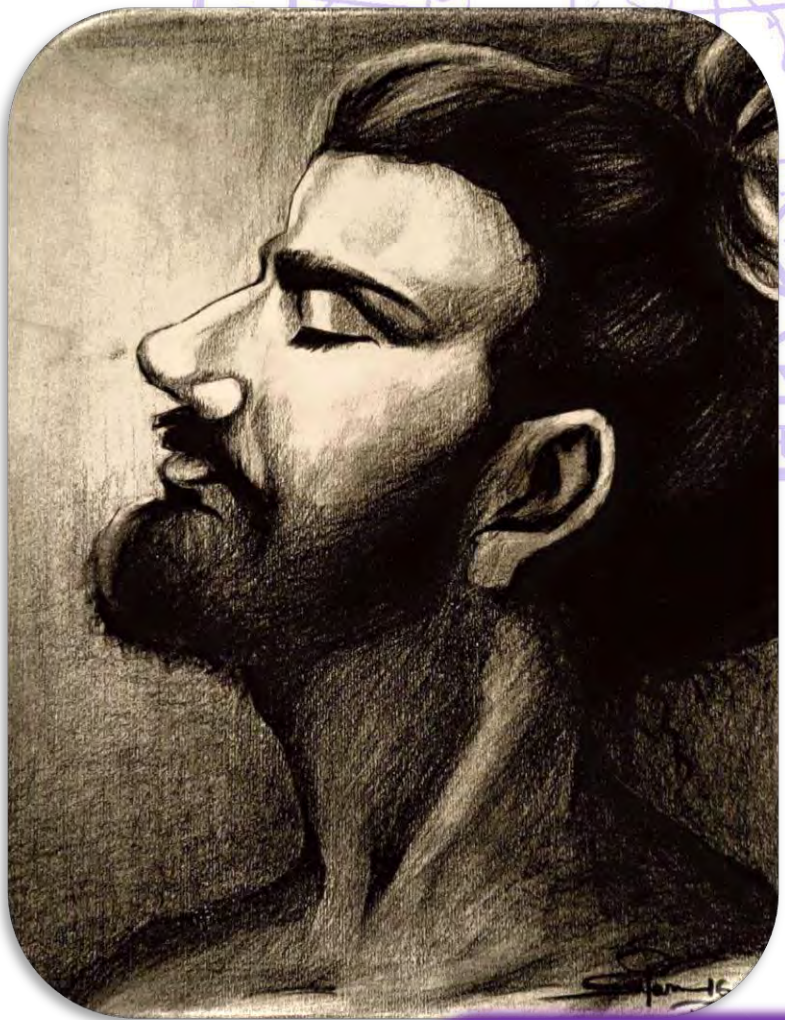

छायांकन : श्रीमती सुपर्णा रॉय

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सम्पर्क सूत्र:
13, वुड स्ट्रीट, भारतीय सर्वेक्षण विभाग
कोलकाता-700016
दूरभाष- 90186 28222
ई-मेल : shubhesh.soi@gov.in

वर्षा की एक रात

घना अन्धेरा था, कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। रात के लगभग ग्यारह बज रहे थे। बाहर जोरों की बारिश हो रही थी। अचानक तेज आवाज के साथ बिजली गिरी और आस-पास की जमीन थर-थर काँपने लगी। एक के बाद एक बिजली गिरती रही और बिजली की रोशनी से पूरी प्रकृति चमकने लगी। मेरे पिताजी कहा करते थे कि बिजली गिरने की आवाज अगर आप सुन लो तो मरने का डर कम हो जाता है। अनेकों आवाजें रात के अन्धेरे को चीरकर कानों तक आ रहा था। गाँव का टूटा-फूटा चिकनी-मिट्टी वाला रास्ता। चिकनी मिट्टी से साइकिल का चक्का फिसलते जा रहा था। साइकिल पर मैं अकेला एक खबर सुनकर भागा जा रहा था। बारिश के पानी और नयन का पानी मिलकर एक हो गया था। मैं करीमपुर गाँव से बागची जमसेरपुर गाँव में जा रहा था।

रास्ता लगभग चार किमी लम्बा था। गाँव के लोगों में एक चर्चा था कि इस रास्ता में भूत है। डर भी लग रहा था। अचानक सामने बिजली कि रोशनी से देखा कि सफेद कपड़ा ओढ़ के एक औरत बैठी हुई थी। भूत है क्या, डर के मारे नजदीक जाके देखा कि एक आकन्द पेड़ (आक पेड़) था, जिसके पत्ते में सफेद रंग की पाउडर जैसी लगी होती है। दूर से इसे देखने पर ऐसा भ्रम हो रहा था। और आगे बढ़ने से हिस्स-हिस्स की आवाज सुनकर मैं साइकिल से गिर गया। बिजली की हल्की रोशनी में देखा कि एक काला रंग का बड़ा सांप फन उठाये सामने है। डर के मारे भगवान को पुकारने लगा। अचानक धड़ाक से बिजली गिरी और धरती थरथराने लगी। सांप भी डर से भाग गये। आगे रास्ता में बांस की झाड़ थी, एक बांस रास्ता में पड़ा हुआ था। जैसे ही साइकिल का अगला चक्का बांस से टकराया, बांस अचानक उछल कर झाड़ के अन्दर चला गया। डर-डर कर मैं मुश्किल से अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंचा।

आस-पास के सभी गाँव का मात्र एक रूपया भिजिट लेने वाला और 24x7 सर्विस देने वाला सबका प्यारा दुलाल डॉक्टर, मेरे अपने दादू का 68 वर्ष में देहान्त हो गया। वह इस संसार को और हम सबको छोड़कर कोई दूर अचिन देश में चले गये थे।

छायांकन : श्री देबेश रॉय

--श्री देबेश रॉय
अधिकारी सर्वेक्षक

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16
ई-मेल : debeshroy.soi@gov.in

हम आम जनता

हम आम जनता – हम आम जनता
जो है सबसे सस्ता – जो है सबसे सस्ता
चुनावी वादों में बिन मोल बिकते हैं
नई सरकार आने तक खुशफहमी में रहते हैं

हाय री आम जनता, सरकारें तो बदली
पर तेरी किस्मत, वो कहां बदली

अब आम भी कहां, अमरूद भी कहां
तेरी किस्मत में तो पपीता भी नहीं
तू आम जनता है – आम जनता
हां, तू मुर्दा तो नहीं, पर जिन्दा भी नहीं
ना मुझ पर भड़कने से क्या होगा
अरे जिन्दा हो तो जिन्दा दिखो
तुम्हें तलवार चलाने कौन कहता
बस कलम ही काफी है, कुछ तो लिखो

तुम लिखो कि ये तुम्हारा अधिकार है
जनता की जनता के लिए चुनी हुई सरकार है
लिखो कि हमारे 'कर' का क्या किया
विकास देश का हुआ कि अपना किया
जो चुनाव से पहले तो बेकार थे
कभी पैदल तो कभी साइकल सवार थे

तुम लिखो कि वो कैसे कार-ओ-कार हैं
बंगले खजानों से कैसे माल-ओ-माल हैं
लिखो विकास गजब का हुआ जनाब है
जो पी रहे वो खून है हमारा, ना शराब है

'शुभेश' तुम लिखो,
तुम्हारी लेखनी रंग लाएगी कभी
क्या पता, मुर्दों में भी जान आएगी कभी

--श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सम्पर्क सूत्र:
13, वुड स्ट्रीट, भारतीय सर्वेक्षण विभाग
कोलकाता-700016
दूरभाष- 90186 28222
ई-मेल : shubhesh.soi@gov.in

छायांकन : श्रीमती सुपर्णा रॉय

सुविचार

मेहनत इतनी करो कि हिम्मत भी बोले ------- ले ले बेटा
हक है तेरा
नियति से लड़ना भी तो नियति बन चुकी है, पर कर्म ही तो
धर्म है तेरा
जीवन में लम्बाई नहीं गहराई मायने रखती है
नीरस बन जाए जीवन तो तन्हाई मायने रखती है
होकर मायूस न यू शाम की तरह ढलते रहो
जिंदगी एक भोर है सूरज की तरह , निकलते रहो
ठहरोगे एक पैर पर तो थक जाओगे,
धीरे-धीरे ही सही मगर राह पर चलते रहो
कोई बोलता है हिन्दू खतरे में है,
कोई बोलता है मुसलमान खतरे में है
एक बेटी बोली - माँ मैं कहाँ जाऊं,
मेरी तो सुबह और शाम खतरे में है
खुद में वो बदलाव लायें आप,
जो दुनिया में देखना चाहते ही आप
दम तोड़ देती है माँ बाप की हिम्मत
जब बच्चे कहते है, आपने हमारे लिये क्या किया
वो बच्चे क्या जानेंगे माँ-बाप की हिम्मत
जिन्होंने कभी नहीं अपने लिए है जीवन जिया

छायांकन : श्रीमती सुपर्णा रॉय

माँ

मेरे जीवन का वास्तविक सच्चाई है माँ
मेरी प्रेरणा है माँ
जब भी मैं थककर निराश होता
तब याद आती है माँ
एक लड़की के रूप में जन्म लेकर
एक घर बनाती है माँ
फ़िर किसी की बहन, बेटी बनकर
उन्हें खुश रखती है माँ
अपने बच्चे को जन्म देकर बनती है, माँ
अपना सब कुछ लुटाकर,
खुद को भूलकर,
घर को स्वर्ग बनाती है, माँ
एक घर में जन्म लेकर
दो-दो घरों को संवारती है माँ
अपने लिए नहीं, दूसरों के लिये जीती है माँ

--श्रीमती सीमा मित्रा
भण्डारपाल (परिवीक्षाधीन)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सम्पर्क सूत्र:
13, वुड स्ट्रीट, भारतीय सर्वेक्षण विभाग
कोलकाता-700016
दूरभाष- 94323 92922
ई-मेल : sima.mitra.soi@gov.in

मेरी दक्षिण ध्रुवीय यात्रा

चंडीगढ़ से अंटार्कटिक (दक्षिण ध्रुव) की यात्रा के लिए जब भारत सरकार के भारतीय सर्वेक्षण विभाग की ओर से मेरे नाम का चयन हुआ तो यह मेरे लिए किसी दिवास्वप्न के पूर्ण होने जैसा था। ऐसी यात्रा की कल्पना भी मैंने कभी नहीं की थी। इसे सुनकर मेरे उत्साह का स्तर किसी पर्वत शिखर से भी ऊँचा हो गया था। भारत से हमारे दल में नौ सदस्य थे जिन्हें वहाँ जाना था। इस यात्रा के पहले चरण में हमें मेडिकल के लिए सितंबर 2016 के पहले सप्ताह में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली में ले जाया गया। वहाँ हमारे शरीर का पूर्ण चैक अप किया गया। छोटे-से-छोटे टेस्ट हमारे शरीर के किए गए। इसके बाद भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस द्वारा ओली व बद्रीनाथ उत्तराखण्ड में विशेष प्रशिक्षण दिया गया जिसमें गलेशियर पर चढ़ना, बर्फ पर ट्रैकिंग करना तथा अंटार्कटिका जैसे क्षेत्र की जलवायु व मौसम के अनुकूल स्वयं को ढालना आदि शामिल था। इसके बाद विभागीय कार्यवृत्त योजना पर समय लगाया गया तथा हमारी यात्रा के उद्देश्य निर्धारित होने के पश्चात हम उस अनन्त पड़ाव की ओर उड़ने के लिए तत्पर थे। 20 नवम्बर 2016 को वह दिन आया जब हमने यहाँ से गोवा के लिए प्रस्थान किया। राष्ट्रीय अंटार्कटिक व समुद्री अनुसन्धान केन्द्र, गोवा में हमें तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया जिसमें समुद्री यात्रा में सुरक्षा संबंधी सावधानियाँ तथा अंटार्कटिक में प्रवास के दौरान आने वाली कठिनाइयों से हमें परिचित करवाया गया। अब हम मानसिक व शारीरिक रूप से अंटार्कटिक यात्रा के लिए पूर्णत: तैयार थे। हम 24 नवंबर 2016 को मुम्बई से केपटाऊन (दक्षिण अफ्रीका की राजधानी) के लिए उड़ चले। केपटाऊन समुद्र के किनारे बसा खुली व नियोजित सड़कों वाला स्वच्छ-सुन्दर शहर है, जहाँ दुनिया के विभिन्न देशों के पर्यटकों की चहल-पहल देखी जा सकती है। सर्वप्रथम पुर्तगाल नागरिक बारटोलोमीयु डियास द्वारा 1488 ई0 में जिस स्थान की खोज की गई उसे 'केप ऑफ स्टॉर्म्स' (तूफानों का केप) नाम दिया गया। वास्को द गामा जिसने भारत की खोज की थी, वह इसी स्थान से होकर निकला था। बाद में इसका नाम 'केप ऑफ गुड होप' पड़ा। यह स्थान अटलांटिक महासागर और हिन्द महासागर को जोड़ता है। यह इस शहर का प्रमुख आकर्षण भी है। इस शहर का एक और रमणीय व दर्शनीय स्थल 'टेबल माऊंटेन' है। केपटाऊन का सबसे ऊँचा स्थान जहाँ से सारे शहर का विहंगम दृश्य देखते ही बनता है। इस शहर का एक और आकर्षण 'सील आइलैंड' है। यहाँ समुद्री सील बहुतायत में देखी जा सकती हैं। यहाँ चार दिन बाद 29 नवंबर 2016 को मुख्य भूमि से हमारी अंटार्कटिक दक्षिण ध्रुव के लिए यात्रा का दूसरा चरण आरम्भ हुआ। छह घंटे की हवाई यात्रा के बाद हम 22 डिग्री सेल्सियस तापमान से एकदम -15 डिग्री के तापमान अंटार्कटिक में बर्फ तल पर बने भवनहीन 'नोवो' हवाई अड्डे पर उतर गए। उतरने से आधा घंटे पहले हमें अंटार्कटिक में पहने जाने वाले पोलर क्लॉथ नामक विशेष परिधान पहना दिया गया। जिसे पहनकर व्यक्ति -40 डिग्री सेल्सियस के तापमान में भी आसानी से रह सकता है। यहाँ से एक घंटे की दूरी तय करके हम भारतीय स्टेशन 'मैत्री' पहुँचे जहाँ पर हमारा भव्य स्वागत किया गया। मैत्री स्टेशन पर हमारा दल एक सप्ताह रुका। 'मैत्री' स्टेशन के पास भारत का 'दक्षिण गंगोत्री' नामक पहला स्टेशन 1981-82 में स्थापित किया गया था जो बर्फ पिघलने के कारण उसी में समाधिस्थ हो गया था। इस दौरान एक दिन हमें रूस के नोवो स्टेशन का दौरा करवाया गया।

उसके बाद दस घंटे की हवाई यात्रा करने के बाद 5 दिसंबर को हम गंतव्य स्थल भारतीय अनुसंधान केन्द्र 'भारती' पर पहुँचे। यहाँ पहुँचने में हमें गोवा से लगभग 36 घंटे की हवाई यात्रा करनी पड़ी।

इस स्टेशन पर शोधकार्य के लिए हमें 60 दिन का समय मिला जिसका विवरण देना कुछ बाध्यताओं के कारण यहाँ संभव नहीं है। जब हमने पहली बार वहाँ कदम रखा तो हमारे चारों ओर सफेद रेगिस्तान हमारा स्वागत कर रहा था। न कोई जानवर और न कोई वनस्पति। हमें ऐसा आभास हुआ जैसे हम किसी दूसरी दुनिया में प्रविष्ट हो गए। हमारे साथ एक अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिकों का दल था जिसमें भारत के अतिरिक्त इंग्लैंड, रूस, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के वैज्ञानिक शामिल थे। अंटार्कटिक एक ऐसा महाद्वीप जिस पर किसी देश का अधिकार या आधिपत्य नहीं है। यह नो मैन लैंड (बर्फ का गोला) है। यह विश्व की साझी धरोहर है जिसे केवल शोध कार्य के लिए ही प्रयोग किया जा सकता है। यहाँ की धरती को प्रदूषण से मुक्त रखने के लिए सभी देशों ने अपने ऊपर विशेष नियम लागू कर लिए हैं। जिन्हें मानने के लिए सभी देश बाध्य हैं। यहाँ प्राणियों की जो गिनी चुनी प्रजातियाँ हैं उनमें पेंगुइन, व्हेलसील, स्नो पैटल, स्कूवा आदि देखे जा सकते हैं। ये प्राणी इस निर्जन स्थान पर मानव को देखकर विस्मित हो जाते हैं और एकटक देखने लग जाते हैं। पेंगुइन इन प्राणियों में पारिवारिक स्वभाव की होती हैं जो सदैव समूह में रहती हैं। ये रहने के लिए जमीन में किसी खोखले स्थान पर निवास करती हैं।

स्नो पैटल एक ऐसा पक्षी है जिसके बारे में यह धारणा है कि यह अपने जीवन में एक बार ही अपना जीवन साथी चुनता है। यदि किसी कारणवश इसका साथी बिछुड़ जाए तो यह दोबारा जीवनसाथी नहीं बनाता और अकेला ही अपना शेष जीवन बिताता है। इन प्राणियों को छूना, भोजन देना या इनके साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ करना सख्त मना है। इस ध्रुव पर न्यूनतम तापमान -89.2 डिग्री सेल्सियस, 21 जुलाई 1983 को वॉस्टोक स्टेशन से मापा गया था। ऐसा माना जाता है कि इससे भी कम तापमान इस ध्रुव के कुछ स्थानों पर पाया जा सकता है लेकिन स्थलों की अत्यधिक दुर्गमता के कारण अब तब वहाँ पर किसी वैज्ञानिक या व्यक्ति का पहुँचना संभव नहीं हो पाया है।

यहाँ दो प्रकार के मौसम सर्दी और गर्मी होते हैं। यहाँ छह महीने के दिन और छह महीने की रात होती है। दिन के समय को यहाँ की ग्रीष्म ऋतु माना जाता है। नवंबर से लेकर फरवरी तक यहाँ का तापमान शोधकार्य के

अनुकूल होता है। (-5 से -15 तक तापमान) इसलिए शोधकार्य केवल गर्मियों में ही यहाँ संभव है। सर्दियों में सारा समय यहाँ रात होती है तथा तापमान भी बहुत नीचे आ जाता है।

सर्दियों में भारतीय अनुसंधान केन्द्र 'भारती' पर तापमान -40 से -50 डिग्री सेल्सियस तक होता है जिसमें शोध कार्य करना संभव नहीं है। यहाँ बारिश एक सपने के समान है जो कभी सच नहीं होता। यहाँ पर सर्द हवाओं के बर्फ से युक्त थपेड़े सहन करना आम बात है। गर्मियों में बर्फ के नीचे पिघले हुए पानी का बहाव सुनना यहाँ का एक अद्भुत अनुभव है।

सितंबर-अक्तूबर के महीने में जहाँ समुद्र जमे होने के कारण उस पर बर्फ पर चलने वाले वाहनों का आना-जाना लगा रहता है वहीं जनवरी तथा फरवरी के अंत में इसी स्थान पर पानी की लहरों का दृश्य विस्मित कर देने वाला होता है। मौसमी परिवर्तन के रूप में यहाँ अचानक आसमान का हरे चमकदार प्रकाश से भर जाना किसी स्वर्गिक दृश्य से कम नहीं होता जिसे 'अरोरा' कहा जाता है। इसी प्रकार के मौसमी परिवर्तन में अचानक चारों ओर सफेद रोशनी का घिर आना बहुत खतरनाक माना जाता है। इसमें एक मीटर से अधिक कुछ भी नहीं देखा जा सकता। इसे 'व्हाइट आउट' कहा जाता है। यहाँ शोधकार्य के हेतु जाने के लिए हेलीकॉप्टर, पिस्टन बुल्ली और स्नो स्कूटर जैसे वाहनों का प्रयोग किया जाता है। इनमें बैठकर यात्रा करना एक सुखद व अद्वितीय अनुभव है।

विशेषकर हेलीकॉप्टर में बैठकर ऊपर से बर्फ के दृश्य देखना एक अनुपम अहसास है।

यहाँ जितने भी देशों के स्टेशन हैं उन पर ताला लगाना वर्जित है। विषम परिस्थितियों में कोई भी वैज्ञानिक निशुल्क किसी भी समय किसी भी देश के स्टेशन में जाकर कुछ भी खा-पी और रह सकता है। यहाँ एक बात और विशेष रूप से उल्लेख करने वाली है कि अंटार्कटिक में प्रवेश करने के बाद किसी भी देश की मुद्रा का चलन नहीं होता और जो वस्तुएं वहाँ मिलती हैं वे बिना किसी शुल्क के उपलब्ध होती हैं। यहाँ किसी के बीमार या दुर्घटनाग्रस्त होने की स्थिति में सभी देशों के दल में सम्मिलित डॉक्टर मिलकर नि:शुल्क उपचार में जुट जाते हैं।

ऐसा देखकर मानवता का व्यवहार साकार रूप में महसूस होने लगता है। यहाँ हर देश के स्टेशन अस्थायी रूप से किसी धातु से निर्मित होते हैं जो पूर्णत: वातानुकूलित व आरामदायक होते हैं।

मनोरंजन के लिए टेबल टेनिस, कैरम बोर्ड, टेलिविजन, इंटरनेट आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इंटरनेट की बहुत बेहतर सेवाएँ यहाँ मिलती हैं जिससे आप शोधकार्य के अतिरिक्त अपने परिजनों से बात भी कर सकते हैं। कुछ वर्ष पहले ये सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध नहीं थी तथा परिस्थितियाँ बहुत कठिन थीं।

6 फरवरी 2017 को उसी रास्ते से होते हुए हम 14 फरवरी 2017 को चंडीगढ़ वापिस पहुँच गए। यह यात्रा मेरे लिए किसी स्वर्गिक यात्रा से कम नहीं थी। इस यात्रा की खुमारी मेरे ऊपर कई दिनों तक छायी रही। वहाँ के दृश्य रह-रहकर मेरे मन-मस्तिक में आज भी कौंध जाते हैं। अंत में मैं भारत सरकार और अपने विभाग के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

--श्री आनन्द कुमार
सर्वेक्षक

सम्पर्क सूत्र:
हिमाचल प्रदेश जीडीसी, चण्डीगढ़
दूरभाष- +91-7889294161
ई-मेल : adv.lohan@gmail.com

बेटियाँ जब खड़ी होंगी

जब खड़ी होगी बेटियाँ जमी पर
जन्नत भी पड़ी होगी जमी पर
बदल देगी हर फिजा को,
जब नूर सी चमक उठेगी बेटियाँ ।
राजनैतिक बिसात की औकात क्या,
भूगोल को भी बदल कर रख देगीं बेटियाँ ।।
सीता नहीं बनना उसे,
जो जुल्म सहे और भू-गर्भ में समा जाये ।
न बनना है द्रौपदी उसे,
जो का-पुरुषों की सभा में सदैव अपमानित होती जाये
जब खड़ी होगी बेटियाँ जमी पर
जन्नत भी पड़ी होगी जमी पर

---O---

अंग्रेजी शुरू होती है "A" for (APPLE) फल से और खत्म होती है "Z" for (ZEBRA) जानवर, मतलब फल से जानवर तक। हिंदी शुरू होती है "अ" से (अनपढ़) और खत्म होती है "ज्ञ" से (ज्ञानी) तक।

--श्री सजल कुमार घोष
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर, पूर्वी मुद्रण वर्ग

सम्पर्क सूत्र:

14, वुड स्ट्रीट
पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता-16

नारी

तोड़ के पिंजरा जाने कब उड़ जाऊंगी
लाख बिछा दो बंदिशें, मुझे पकड़ न पाओगे।
मुझे गर्व है मैं नारी हूं।

रूढ़िवादी-जंजीरों से बंधे हैं पर मेरे
सब-कुछ तोड़ मैं जाऊंगी
नहीं किसी से कम हूं मैं, सारे जग को दिखलाऊंगी
जो नियति से हारे, ऐसी नही लाचारी हूं
हां गर्व है मुझे, मैं नारी हूं

केवल उपभोग की वस्तु नहीं मैं
और नहीं मैं अबला मात्र,
मैं शक्ति स्वरूपिनी काली हूं
हर मुश्किल से लड़ने वाली हूं

केवल स्वयं ही नहीं पूरे परिवार की करती रखवाली हूं
प्रेम-समर्पण की सूरत हूं,
त्याग दया की मूरत हूं
हां मैं नारी हूं, मुझे गर्व है मैं नारी हूं।

छायांकन : श्रीमती सुपर्णा रॉय

--श्री के.पी. मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16
ई-मेल : kali.mishra.soi@gov.in

भारतीय सर्वेक्षण के बहुमूल्य रत्न

अक्सर महान शोधकर्ता के कार्यों को इतिहास में दफन कर दिया जाता है। कुछ ऐसा ही सर विलियम लैम्बटन के साथ भी हुआ। जिस व्यक्ति को दुनिया का महान वैज्ञानिक कार्य करने का सम्मान मिला – द ग्रेट ट्रिग्नोमेट्रिकल सर्वे उन्हीं की समाधि काला गोटा के नाम से जानी जाती है। काला गोटा एक भीड-भाड़ वाली बस्ती, बस स्टेशन के पीछे, हिंगनघाट तहसील, जिला वर्धा में स्थित है । यह बडे दु:ख की बात है कि ऐसे महान व्यक्ति की समाधि आज भी उपेक्षित अवस्था में पडी है । आश्चर्य की बात यह है कि आज भी बहुत कम ही लोगों को इस का पता है। उनकी समाधि के पास ही एक GTS BM है जो की सन् 1907 में बनाया गया है ।

सर विलियम लैम्बटन का जन्म Crosby Grange, नार्थ एलर्टन के पास नार्थ यॉर्कशायर में हुआ था । उनके पिता पेशे से किसान थे । बचपन से ही उनको गणित में विशेष रुचि थी । उन्हें सन 1781 में ग्रामर स्कूल में पढ़ने का मौका मिला और फिर उनका चयन इंसिगनशिप जो की एक स्थान का नाम है, में 33 रेजिमेंट ऑफ फोर्ट में हुआ । वे बैरेक मास्टर के पद पर नोवा स्कोटिया में भर्ती हुए थे । वे जब 33 रेजिमेंट में थे तब उन्होंने अमेरिका वार ऑफ इनडिपेंन्डेन्स में भाग लिया जिसके परिणाम स्वरुप उन्हें यॉर्कटाउन में बंदी बनाया गया । वहां से छूटने के बाद वे न्यू ब्रून्सविक आए और वहां उन्होंने अमेरिका एवं कनाडा के मध्य सीमा निर्धारण के सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ किया । सन् 1795 में ड्यूक ऑफ योंक के आदेश से सारे सिविलियन ऑफिसरों को रेजीमेंट से निष्कासित कर दिया गया, जिसमें उनका निष्कासन भी शामिल था । 13 वर्ष की रेजीमेन्ट सर्विस से सेवानिवृत्ति के पश्चात वे 33 वीं रेजिमेंट कलकत्ता में शामिल हुए । 33 वी रेजिमेंट कलकत्ता उस समय सर आर्थर वेलेस्की के कमांड में थी । सन 1796 में उनको लेफ्टिनेंट के पद पर पदोन्नत किया गया और भारत में उनकी तैनाती कर दी गई ।

भारत जैसे बडे देश का अगर मानचित्र बनाना था तो हमे सिर्फ geodetic survey करके ही प्राप्त हो सकता था । सन् 1799 में कर्नल मैकेन्जी के नेतृत्व में चौथा आंग्ल-मैसूर युध्द प्रारंभ हुआ, जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई और मैसूर ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया । सर विलियम लैम्बटन ने ब्रिटिश सरकार के सामने सर्वेक्षण का प्रस्ताव रखा, जिसका उद्देश ब्रिटिश साम्राज्य के वास्तविक अधीन स्थल/क्षेत्र को जानना था । ब्रिटिश सरकार ने उनके प्रस्ताव को मुजूरी दे दी एवं सर विलियम लैम्बटन ने सर्वेक्षण का कार्य उसके दो वर्ष बाद प्रारंभ किया । उन्होंने सर्वेक्षण के लिये Geodesy प्रणाली का प्रयोग किया, जिसकी खोज William Roy (Great Britain) ने की थी ।

सर विलियम लैम्बटन ने क्षेत्र मापन का सर्वेक्षण आरंभ बेस लाइन ऑफ सेन्ट थॉमस माउन्ट मद्रास से किया और त्रिकोणीयन का कार्य करते हुए मैंगलोर तक गये । सन् 1806 में उन्होंने अपना अक्षांक्षिय मापन 100 मील नॉर्थवार्ड मैंगलोर तक किया, जहाँ ब्रिटिश साम्राज्य का क्षेत्राधिकार समाप्त होता था । सर्वेक्षण का कार्य करते हुए वे हैदराबाद से नागपुर की ओर आए, इसी अवधि में वे हिंगणघाट में 13 वर्ष तक रहे थे । 70 वर्ष की आयु में वह हिंगणघाट में गंभीर रुप से बीमार हुए तथा 20 जनवरी 1823 को उनकी मृत्यु हुई ।

सर विलियम लैम्बटन की समाधि 300 वर्ग फीट पर निर्मित की गई है । जिस पर 52 चौकोर काले पत्थर लगाये गये हैं एवं स्मारक के ऊपर 34 काले पत्थरों से एक चौकोर स्तंभ खड़ा किया गया है । पुरातत्व विभाग ने भी कुछ वर्षों पहले उसके चारों ओर सीमा निर्धारण कर एक दीवार खडी की है। सर विलियम लैम्बटन का सर्वेक्षण कार्य अधूरा नहीं रहा, उनके इस कार्य को पूरा करने की जिम्मेदारी सर जॉर्ज एवरेस्ट ने ली । उन्होंने 25 वर्ष तक अथक परीश्रम कर आर्क ऑफ द मेरेडियन का काम पूरा किया जो कि कभी किसी ने नही किया था । यह काम cape comorin से शुरु होकर लगभग 2,400 किलोमीटर उत्तर में हिमालय तक था । इस काम में उन्होंने कड़ी मेहनत की और साथ ही शुध्दता का ध्यान भी रखा । जब पहले उन्होंने सर विलियम लैम्बटन के साथ सहायक के तौर पर काम करना शुरु किया तो वे उनसे 36" थिओडोलाईट जो कि लंदन में बनायी गयी थी से अवलोकन करना सीखे । फिर झेनित सेक्टर, रेम्सडेन 100 फीट स्टील चेन और क्रोनोमीटर भी सीख गये । कुछ ही दिनों में उन्होंने इन सब चीजों में महाराथ प्राप्त कर ली । सर विलियम लैम्बटन के जाने के बाद जॉर्ज एवरेस्ट सतत सर्वेक्षण करते गये । उन्हें काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा । भारत का वातावरण, पर्यावरण उनके देश जैसा नहीं था और ना ही भूमि समतल थी ।

इसके साथ हर मापन को शुद्धता से लेना था । उन्होंने कई बार परीक्षण किया और रीडिंग ली मगर कभी भी उन्होंने शुद्धता से समझौता नहीं किया । इस काम के दौरान जब थियोडोलाइट दो बार गिर गयी तो उसे मरम्मत कि जरुरत पड़ी । झेनिथ सेक्टर का माईक्रोमीटर स्क्रू टूट गया और स्टील चेन को 25 साल तक केलिब्रेट नहीं किया गया । इस दौरान जार्ज एवरेस्ट बहुत बीमार हो गये और उन्हें वही पर रुकना पड़ा ।

कुछ समय बाद एवरेस्ट फिर नवम्बर 1825, में इंग्लंड चले गए । वे अपने साथ सारे गणितीय दस्तावेज और केलकुलेशन्स को कंपाईल करने में लग गए जो कि 18^0 03' और 24^0 07' के आक्षांश के बीच के थे । एवरेस्ट ने अपना काफी समय फिर इंस्ट्रूमेंट मेकर ट्रौगटान और सिम्स की प्रयोगशाला में बिताया जिसमें उन्होंने 36" थिओडोलाइट, ए निव झेनित सेक्टर, 6 छोटे थिओडोलाइट बनाए । इन सब अनुभवों को उन्होंने कुछ इन शब्दों में बताया ।

"I have devoted some considerations to the improvement of the common theodolite which is both cumbersome and more expensive than need be and often freequent examination of all the best devices, I could meet with in the shape of various makers in London, Mr. Simons has at my suggestion designed an instrument which Contains all the useful parts of the old construction is quite free from superfluous apparatus and is cheaper by one forth.

The model has only an inch diameter but the principle is so perfect applicable to all instruments for secondary mangles that I should respectfully recommend the property of adopting this as the Honorable East India company's from for all small theodolites not existing 12 inches diameter and pre serving on all future occasions the strictest uniformity".

इसके बाद श्री जार्ज एवरेस्ट ने दूरी मापन का काम Col. Colby's से सीखा जो की कंपनसेटिंग बार से आइरिश सर्वे के लिए काम करते थे । उन्हें ये पध्दति बहुत अच्छी लगी और उन्होंने छ: वर्ष ग्रेट टिग्नोमेट्रीकल सर्वे के लिए ले लिये । फिर वे ग्रीनवीच जाकर उनपर अभ्यास करने लगे । साथ ही उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेज लिखे जिसमें उन्होंने यह अनुरोध किया कि एक instrument maker भारत में लाया जाए। उनका यह अनुरोध मान लिया गया और श्री हेनरी बैरो को भारत में भेजा गया । हेनरी बैरो ने अथक प्रयास एवं मेहनत कर Cary Theodolite को ठीक किया और उसे फिर से नए जैसा बना दिया । मेजरमेंट ऑफ आर्क ऑफ मेरेडिअन द ट्रिग्नोमेट्रिकल सर्वे द्वारा हमें पृथ्वी के आकार को पता करने में मदद मिलती है। सबसे पहले आर्क दूरी को गिनने का काम ग्रीक विद्वान इरेस्थोंथेनिस ने 250 बी सी में किया था ।

चाप की लंम्बाई का समीकरण वैसे तो सरल लगता है मगर जब हम उसे वास्तविक पर करते हैं तब वह कठिन हो जाता है ।

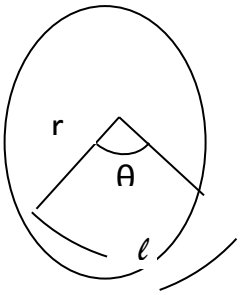

चाप की लंम्बाई (l)

$= \text{वृत्त की परिधि } (r) \times \frac{\text{केन्द्र पर बना कोण } (\theta)}{360^0}$

Eratosthenes ने इजीप्ट में अलेक्सझेड्रींया और साइनी के बीच के आर्क को गिना था । उसे दोनों गावों के बीच का अंतर आर्क 7' 12" मिला जो की 50 वाँ हिस्सा पृथ्वी की परिधि का है । जिससे पृथ्वी का परिधि 46,250 किमी अथवा 28,750 मील मिली जो की अभी के आकडों से 15% अधिक है । Eratosthenes के बाद 18वीं सदी में ऐसे मापन के कार्य शुरु हुये ।

आज भी ऐवरेस्ट स्फेरायड का उपयोग भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बर्मा, श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान और अन्य दक्षिण पूर्वी देशों में किया जाता है । हाल ही में उत्तरी अमेरिका मानचित्र के लिए Clarke (1866) के अलावा Ellipsoid World Geodetic System-84 Ellipsoid का उपयोंग करने लगे है ।

सर जॉर्ज एवरेस्ट इनका निधन 1 दिसंबर 1866 छिहत्तर साल की उम्र में हायडें पार्क गार्डन्र्स, लंदन, इंग्लैण्ड में हुआ । उनकी समाधि सेंट एन्ह्यूस चर्च , अर्थ रोड, होवे में स्थित है ।

सर विलियम लैंम्बटन के किये गये कार्यो के लिए अमेरिका, कनाडा और इंग्लैंड जैसे कई देश विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करते आ रहे है वहीं अपने देश में इतने महान व्यक्ति की समाधि पर एक फूल भी अर्पण होने की संभावना नहीं है । भारतीय सर्वेक्षण का कार्य करते हुए ही उनकी मृत्यु हुई थी । उनके इस कार्य को और उनको शत्-शत् नमन ।

--श्री मनीष कुमार ढोके
सर्वेक्षक
महाराष्ट्र एवम् गोआ जीडीसी, पुणे
सम्पर्क सूत्र:
दूरभाष- 86008 89893
ई-मेल : manishastronomy@rediffmail .com

मैं और तुम

सुबह का समय था। चारों तरफ घना कोहरा छाया हुआ था। हाथ को-हाथ नहीं सूझ रहा था। मैं मन ही मन सोच रहा था कि हम कभी झुलसती गरमी और कभी कंपकंपाती सर्दी को झेलते हैं। इन सब पर हमारा वश क्यों नहीं है। मैं कौन हूं और इन सब परिर्वतनों, घटनाओं को अंजाम देने वाला कौन है। वह शक्ति कौन है जो मुझे और सबको नियंत्रित कर रही है। मैं अनायास ही पूछ पड़ा, तुम कौन हो?

एक दिन मैं श्मशान घाट के पास से गुजर रहा था, मैंने देखा एक जलती हुई चिता के दोनों तरफ एक-एक आदमी बैठे हुए थे। एक के कपड़े फटे हुए थे और बाल-दाढ़ी बढ़े हुए थे। दिखने में गंदी सूरत वाला वह कोई पागल लग रहा था। दूसरा एक बैंगनी वस्त्र का परिधान पहने और सर मुंडाये एक ख्यापा सन्यासी था। अचानक दोनों खड़ा होकर एक-दूसरे का हाथ पकड़कर नाचने लगे और गोल-गोल घूमने लगे। वे कभी हंसते तो कभी रोते। बीच-बीच में कुछ बोल भी रहे थे। मैं उनकी बातों को सुनने के लिए उनके नजदीक गया। उनमें एक बोला- 'कहां मिलेगा'। दूसरा बोला- 'ढूंढते-ढूंढते'। दोनों कभी आश्चर्यमिश्रित आनन्द से विभोर होते तो कभी आंखों में अश्रु भरकर रोने लगते।

ख्यापा सन्यासी ऐसे ही परम तत्व की खोज में भटकते रहते हैं। मैं सोचने लगा कि अभी कुछ समय पहले यह चिता जो जल रही है वो मनुष्य रूप में अनेक कष्टों को झेल रही थी, परंतु अभी वह परम ब्रह्म में लीन हो गयी है। सचमुच मैं कौन हूं और हे परम शक्ति तुम कौन हो ?

--श्री देबेश रॉय
अधिकारी सर्वेक्षक

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16
ई-मेल : debeshroy.soi@gov.in

छायांकन : श्री देबेश रॉय

हम भारतीय कहलाते हैं

हम बच्चे हंसते गाते हैं
हम आगे बढ़ते जाते हैं
पथ पर बिखरे कंकड़ कांटे
हम चुन चुन दूर हटाते हैं ।।
आये कितनी भी बाधाएं
हम कभी नही घबराते हैं,
धन दौलत से उपर उठ कर
सपनों का महल बनाते हैं ।
हम ख़ुशी बढ़ाते दुनिया की
हम हंसते और हंसाते हैं
सारे जग में सबसे अच्छे
हम भारतीय कहलाते हैं ।

--श्री परिमल दास
सहायक

सम्पर्क सूत्र:

14, वुड स्ट्रीट
पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता-16

टेण्डर

सरकार ने एक पुल के निर्माण हेतु टेण्डर निकाला। बहुत लोगों ने निर्माण कार्य हेतु अपना टेण्डर भेजा। बोर्ड ने अंतिम रूप से 2 टेण्डर का चयन किया। बारी–बारी से दोनों को बुलाया गया।

अफसर : आपने तीन करोड़ का टेण्डर दिया है क्या आपको पता है, इतने कम में काम कर लोगे।

पहला फर्म : हां सर, मैं पूरी ईमानदारी से कार्य करता हूं। इतने में ही निर्माण कार्य सम्पन्न हो जाएगा। आप एक बार सेवा का मौका तो दीजिए।

अफसर : अच्छा तो बताओ कैसे काम करोगे।

पहला फर्म : सर दो करोड़ तो पुल निर्माण की लागत आएगी। शेष 1 करोड़ में कामगारों को देय मजदूरी–वेतन इत्यादि के अलावा मेरे फर्म का लाभांश सम्मिलित है।

अफसर : धन्यवाद् आप बाहर इंतजार करें, आपको बुलाया जाएगा।

अब दूसरे फर्म को बुलाया गया–

अफसर : हां जी आप ने 9 करोड़ का टेण्डर भरा है। बताओ इतने पैसे में आप क्या–क्या करोगे।

दूसरा फर्म : सर मैं तो जो आप आदेश करोगे वही करूंगा। रही बात पुल निर्माण की तो आप आदेश करें तो टेण्डर मुझे दिलवा दें और कार्य पहले वाले फर्म से करायें।

अफसर : क्या कह रहे हो ?(अफसर गुस्से में बोल पड़ा)

दूसरा फर्म : साहब नाराज मत हों, मैं तो बस यही कह रहा था, सरकार की नजरों में आप टेण्डर हमें दें और कार्य करने के लिए पहले फर्म को 3 करोड़ दे देते हैं। वो ईमानदारी से कार्य करेंगे। वो भी खुश और बाकी बचे 6 करोड़ को हम और आप आपस में रख लेते हैं, हमलोग भी खुश।

अफसर को गणित अच्छी तरह समझ में आ गई। अंतत: 9 करोड़ का टेण्डर पास हो गया। पहले फर्म को अपनी ईमानदारी दिखाने का मौका मिला वो खुश हों तो दूसरे फर्म और अफसर महोदय को अपनी गणित पर नाज है, वो भी खुश।

--श्री के.पी. मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16
दूरभाष- 93395 18685
ई-मेल : kali.mishra.soi@gov.in

मेरे सेवा काल के कुछ अनुभव

इस अनुच्छेद में लिखे गए सभी बातों का विश्लेषण मेरा अपना है, मेरा उद्देश्य किसी का अपमान करना अथवा किसी की भावनाओं को आघात पहुंचाना नहीं है।

पश्चिम बंगाल जीडीसी से लगातार तीसरे साल हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन होने वाला है। मैंने पूर्व के 2 अंकों में अपना फील्ड जीवन के अनुभवों को साझा किया था। जब तृतीय अंक के प्रकाशन की सूचना प्राप्त हुई तो मैंने पहले ही सोच लिया था कि इस बार मैं अपने पिछले 25 वर्षों के सेवाकाल के बदलते घटनाक्रम के बारे में जिसमें कार्यालयी जीवन में कितने परिवर्तन का दौर मुझे देखने को मिला उन अनुभवों को साझा करूंगा। इन्हीं अनुभवों को लेकर मैं आपके सम्मुख उपस्थित हूं।

1991 में जब मैं पहली बार इस डिपार्टमेंट में आया तब का सर्वे ऑफ इंडिया और 2018 का सर्वे ऑफ इंडिया में बहुत चरित्रगत परिवर्तन हो गया है। इस परिवर्तन को दो भागों में विभजित किया जा सकता है । 2004 से पहले का काल और 2004 के बाद का काल अर्थात जीडीसी के फॉर्मेशन के बाद का काल। मेरे मतानुसार जीडीसी कांसेप्ट के पहले ऑफिसियल डेकोरम बहुत अच्छा था। काम का परिवेश बहुत विस्तृत और अच्छा था। वरिष्ठ और कनिष्ठ कर्मियों के बीच सम्बंध भी अच्छे थे, दोनों ही एक-दूसरे का सम्मान करते थे। काम के महत्ता से एक दूसरे को समझते थे , लेकिन अभी ऐसा नहीं हो रहा है।

इसका पीछे ऑफिस का काम करने का परिवेश एक प्रमुख कारक है। आज का काम करने का तरीका और कार्मिकों की संख्या पहले के हिसाब से कुछ भी नहीं है। दिनों-दिन कार्मिकों की संख्या कम होती गई और उस अनुसार काम के परिवेश में बदलाव भी अनिवार्य हो गया। खासकर जीडीसी बनने के बाद स्ट्रक्चर में जो बदलाव हुआ वह बहुत ही महत्वपूर्ण है । पहले सेक्शन, यूनिट, निदेशक, अपर महासर्वेक्षक और शीर्ष पर महासर्वेक्षक। आज भी वही स्थिति है लेकिन कैरेक्टर बदल गया। अभी व्यक्तिगत निपुणता के उपर कार्य सफलता निर्भर करता है। कर्मी कम होने के कारण और काम करने की पद्धति के परिवर्तन के साथ-साथ हम लोग भी परिवर्तित हो गये। 1991 में मैं जब टी टी टी ए बना था तब मैं देखा था कि 25 सालों से एक सर्वेक्षक का कोई प्रमोशन नहीं हो रहा है। कई व्यक्ति एक ही पोस्ट पर कार्य करते-करते सेवानिवृत हो गये। 1996 में पांचवां वेतन आयोग की रिपोर्ट लागू होने का बाद अचानक एक अद्भुत परिस्थितियों का सृष्टि हुआ।

जिसको इतने सालों से कोई प्रमोशन नहीं मिला था वो लोग आर्थिक रुप से लाभान्वित हुए और उन लोगों को एक यूनिट प्रभारी (O.C., Party) के बराबर वेतन मिलने लगा। किसी ने यह सोचा नहीं कि अगर उसको समय पर प्रमोशन मिलता था तो उसका वेतन उतना ही होता था और वह यूनिट प्रभारी भी बनता था। लेकिन किसी किसी को यह चीज पसंद नहीं आया और उनका ऊपर उसका गुस्सा आता रहा और किसी-किसी को इसका फल भी भुगतना पड़ा। पहले का समस्या तो दूर हो गया है लेकिन अभी दूसरा समस्या पैदा हुआ। नई समस्या यह हुआ कि अभी 5 सालों में ऑफिसर सर्वेयर बनने का मौका मिल रहा है लेकिन उसके बाद उसका वही हाल होता है जो कि आज से 25 साल पहले सर्वेयर लोग को हुआ करता था। अभी कई सालों इंतजार करना पड़ता है अगले प्रमोशन के लिए। इंतजार करते-करते रिटायरमेंट हो जाता लेकिन प्रमोशन नहीं होता।

मेरा टीटीटीए पद के शुरुआती दिनों में यह घटना सामने आया। असली बात यह है कि हमारा सर्वे ऑफ इंडिया का परिवार 250 वर्षों का एक बड़ा सा बरगद का पेड़ है। हमारा ऑफिस में ऑफिसर का इतना ग्रेड और इतना कैडर है कि उसका हिसाब करना बहुत मुश्किल है। यह समस्या मॉडर्न टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल होने से बड़ी रूप से दिखाई दे रहा है। पहले का कार्य पद्धति बहुत लंबा था और उसके लिए समय-समय पर नया कैडर का जरूरत हुआ करता था। लेकिन एक दिन में यह समस्या बंद होने वाला नहीं है धीरे-धीरे इसको ठीक करना पड़ेगा। इसके लिए गंभीर रूप से चिंता करने का वक्त आ गया है। मेरा हिसाब से जल्दी से जल्दी से जल्दी कैडर पुनर्विन्यास होना चाहिए। खास करके निचले हिस्से का कर्मचारियों को बीच के लिए।

ऐसे ही दिन पर दिन काम करने वाला कम होते जा रहा है ऊपर से APAR के चाप। आगे का जमाना में अगर किसी एंप्लॉइज को आर्थिक रुप से दंड देना था तो बड़ा ऑफिसर को बहुत सोच समझकर चिंता करते ही उसके ऊपर कार्रवाई करना पड़ता था । आज का सिचुएशन कुछ दूसरा ही है अगर किसी को आर्थिक रुप दंड देना है तो उसको APAR में 6 से कम देने से ही काम चलेगा। इसके लिए कोई दूसरा कुछ कर नहीं पाता दो कलम लिखने से ही चलेगा। सबसे मजे की बात यह है कि आपको ही APAR में जितना भी मिलेगा वह आपको दिखाई देगा। उससे बचने के दो ही रास्ता है यह आप जिसका अंडर में काम कर रहे हो उसका बातों में मनमानी करते उसे हमेशा हां से हां और ना से ना कहना और दूसरा है कि आप कुछ बात नहीं करके दिन भर काम में लगे रहे। अगर आप थोड़ा सा काम और थोड़ा सा हां में हां कर सकते हो तब से तो इससे बढ़िया और कुछ भी नहीं है।

सब मिलाकर हमारे सर्वेक्षण फैमिली में अभी एक transition पीरियड चल रहा है। यह जितना लंबा दिन चलेगा उतना ही खराब परिस्थिति होगा। APAR में कम मिला और आप ऊपर में अर्जी पेश किया उसमें आपको APAR सही हो गया नंबर भी ऊपर हो गया लेकिन इसके लिए जो टेंशन आपको मिला इससे निकलने का रास्ता कहां है?

जब से मैं नौकरी शुरु किया तब से एक बहुत आश्चर्य बात सुनते आ रहा है वह है सीनियरिटी। एक ऑफिसर को आज प्रमोशन मिल रहा है और उसको सीनियरिटी मिल रहा 4 साल से पहले जब से वह भर्ती हुआ था। हो सकता है यह रूल में है लेकिन मुझे वह रूल पता नहीं है। मन में यह भी प्रश्न उठता है की अगर रूल है तो पहले से इसको लागू क्यों किया नहीं जा सकता है। हमारा खुद का केस में भी ऐसा ही हुआ जब मेरा प्रमोशन 2006 जनवरी में मिला और मेरा को सीनियरिटी मिला 2005 का।

हमारा डिपार्टमेंट में कागजी सतह पर बहुत सी रूल है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। जैसे को एक सर्वेयर को टीटीटी ए से सर्वेयर बनने के 5 साल बाद ऑफिसर सर्वेयर बनने के लिए लिमिटेड डिपार्टमेंटल एग्जाम का मौका मिलता है । लेकिन सबके लिए ऐसा नहीं है। मेरा अपना केस में ऐसा हुआ है , मैं 1993 में सर्वेयर बना और 1998 में ऑफिसर सर्वेयर के परीक्षा के लिए एलिजिबल था। लेकिन आश्चर्य बत यह है कि 1998 के बाद 2004 तक जब भी कोई परीक्षा होने का बात है तो हमलोग को बताया गया कि आप लोग पात्र नहीं है। आख़िर में जब 2004 में परीक्षा हुआ तो 2004 तक जो भी पात्र थे उसको भी परीक्षा में बैठने का मौका मिला। 13 पोस्ट के लिए हो परीक्षा हुआ था लेकिन बाद में देखा गया कि 30 सर्वेयर को उस परीक्षा के बाद प्रमोशन मिल गया। उसका बाद कोई केस हुआ कौन सीनियर होगा कौन जूनियर होगा इसके ऊपर। हमारा अभी तक उसका कोई खास फैसला

नहीं हुआ। मजे की बात यह है कि ट्रेनिंग में जो लड़का सबसे पीछे आया और आज वही प्रमोशन पाकर के सीनियर बन गया। सर्विस लाईफ में इतने सालों बाद यह स्थिति बहुत दुःख दायक है।

एक बार मिजोरम बांग्लादेश बॉर्डर में काम करते हुए BSF का आउटपोस्ट में बीएसएफ का कमांडेंट साहब से मिले थे। उन्होंने हमारे सर्विस के भविष्य के बारे में पूछे थे। मैंने जब सौद्धांतिक पाठ बताया तो वो बहुत खुश हुआ और वह बोले कि अपनी बेटी को सर्वे में नौकरी के लिए तैयार करेंगे। उस दिन मैं यह नहीं बता पाया कि इसका छुपा हुआ और अज्ञात अध्याय क्या है।

इतना कुछ होने के बाद भी मैं यह स्वीकार कर लूंगा कि इतना रंगीन और गंभीर नौकरी शायद दूसरा कोई नहीं है। इतने सालों के बाद ट्रेनिंग की बातें याद आ रही है। कितने रात बीत गये तारों को देखते हुए। तब मैं युवा था और ग्रेजुएशन में एस्ट्रोनॉमी सीखकर हम डिपार्टमेंट में आए हुए थे। किताबों में लिखा हुआ चीज जब प्रैक्टिकल में करना शुरू किया तो लगा हम दूसरा जगत में प्रवेश कर चुके और मेरा जिंदगी भर गया है।

कभी-कभी मैं सोचता हूं कि इस नौकरी से मुझे क्या-क्या चीज मिला तो मुझे मिलने वाली चीज का तालिका इतना लंबी हो जाती हैं कि कोई अन्त नहीं मिलता। शायद इसी को सेटिस्फेक्शन बोलते हैं।

--श्री रूप कुमार दास
अधिकारी सर्वेक्षक

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16
ई-मेल : rupdas.soi@gov.in

हिंदी का भविष्य

हमारे संविधान में हिंदी को ही राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया है और सन 1965 से सम्पूर्ण देश में इसके व्यवहार का संकल्प किया गया है। इस पावन यज्ञ कि सफल पूर्ति के लिए पूर्ण तन-मन से सहयोग देना चाहिए। लेकिन बहुत दुःख से कहना पड़ता है कि राजनीतिक चाल में समर्थ तथा अंग्रेजी के अंध-भक्त अब भी दासत्व के विरोध का दुस्साहस कर रहे हैं। परन्तु इसके गुणों एवं विशेषताओं के आगे उनकी आवाजे अनसुनी रही है। भारत के अन्य प्रांतीय भाषाओं की अपेक्षा हिंदी में ही वे सब गुण विद्यमान है जो किसी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में अन्य भाषाओं की सामग्री बना देती है।

हिंदी उस क्षेत्र की भाषा है जो कि निःसंदेह क्षेत्रफल में तो अन्य राष्ट्रों कि अपेक्षा अधिक विस्तृत है ही, साथ ही हिंदी कि सर्वोपरि विशेषता है उसकी सरलता, जिस रूप से वह लिखी जाती है उसी में बोली जाती। अतः अहिन्दी भाषी जन को उसको सीखने में कोई कठिनाई नहीं होती। यह गुण भारत के किसी अन्य भाषा में नहीं। फिर यह अपने मूल स्त्रोत में संस्कृत की अधिकारिणी है, अतः दक्षिण कि तमिल भाषा को छोडकर सबके साथ कुछ न कुछ उसके साम्य है ही। गुजराती तो निःसंदेह थोड़े अंतर से ही हिंदी का सहोदर रूप है। आसामी में बहुत से शब्द मिलते हैं और बंगला भाषा साहित्य पर तो हिंदी का प्रभाव है ही।

ब्रह्म रूप से नाम साम्य भी हिंदी में ही है और फिर आज व्यवहार में देश के कोने- कोने में इसी का प्रयोग होता है। शायद ही कोई अभागा ऐसा हो जो आज हिंदी के ब्रह्म ज्ञान से विहीन हो। अतः यही राष्ट्रभाषा होनी चाहिए।

--श्री नागेश्वर गोप
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

सम्पर्क सूत्र:

14, वुड स्ट्रीट
पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता-16

स्वतन्त्रता दिवस

पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालिस के दिन भारत आजाद हुआ। देश में जितने भी पर्व मनाये जाते हैं स्वतन्त्रता दिवस एक प्रमुख पर्व है, देश स्वतंत्र हुआ हमें हर पर्व मानाने कि आजादी भी मिली। आज हम स्वतंत्र है हमारा राष्ट्र स्वतंत्र है। भारत को स्वतंत्र कराने में हमारे वीरपुत्रों को कितनी मशक्कत करनी पड़ी थी हम इसे भूल नहीं सकते। अंग्रेज हमारे देश पर हमेशा के लिए राज करना चाहते थे हमें गुलाम बनाकर जंजीरों में कैद करना चाहते थे जैसे कि देश का भाग्य विधाता हो लेकिन हमारे वीर बहादुरों ने अपनी जान कि बाजी लगाकर भारत को आजाद कराया। राजदेव, सुखदेव, चन्द्रशेखर और कई क्रांतिकारियों ने क्रान्तिकारी आन्दोलन चलाकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की। ब्रिटिश शासन ने हमारे वीरों पर बहुत जुल्म ढाये थे, आज भी देश भक्ति गीत गूंजता है "मेरे वतन के लोगों जरा आँखों में भर लो पानी जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी"।

आज दिनांक 15/08/2018 को भारतीय सर्वेक्षण विभाग कोलकाता स्थित तीनों कार्यालयों ने संयुक्त रूप से पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र के प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस समारोह में पूर्वी क्षेत्र, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी एवं पूर्वी मुद्रण वर्ग के अधिकारीगण एवं साथियों ने भाग लिया मैं भी इस महान पर्व में उपस्थित होकर अपने आप को भाग्यशाली समझा। नारी शक्ति एवं बच्चों की भी उपस्थिति कुछ कम नही थी।

प्रातः निर्धारित समय 10.00 बजे माननीय श्री संजय कुमार, निदेशक,प०ब० एवं सिक्किम जीडीसी कोलकाता ने श्री अमित अधिकारी, (प्रबन्धक कनिष्ठ), निदेशक(सामयिक कार्यभार) एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के उपस्थिति में झंडोत्तोलन किया पुष्प संग बरसात कि रिमझिम बूंदों कि वर्षा से पृथ्वी सुशोभित हुई, तत्पश्चात श्री संजय कुमार महोदय ने अपना वक्तव्य रखा फिर दो संगीतकारों द्वारा संगीत प्रस्तुत किया गया मिठाइयाँ बांटी गयी।

हम सब पुन: इसी स्थान में अगले वर्ष इसी त्यौहार में मिलेंगे यही आश्वासन देकर सभी विदा हुए। "जय हिन्द" वन्दे मातरम ।

--श्री देव नारायण सिंह
अभिलेखपाल डिविजन -I

सम्पर्क सूत्र:

14, वुड स्ट्रीट
पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता-16

मुद्रण में रंगों का सुमेलन

मानचित्र का तैयार होना या खराब हो जाना प्रायः इस बात पर निर्भर है कि मानचित्र का पुनरुत्पादन किस तरीके से किया जाता है। रजिस्ट्रेशन बिलकुल सही और प्लेटें अच्छी किस्म की होने पर भी बहुत कुछ मुद्रण में प्रयोग किये जाने वाले रंगों के गाढ़ा होना और टोन पर निर्भर होता है। जहां तक सम्भव हो मानक रंगो का प्रयोग करना चाहिए किन्तु मुद्रण के रंगों और उनके गाढ़ा होने का सम्बन्ध में कोई पक्के नियम निर्धारित नही किये जा सकते क्योंकि जो रंग एक शीट के लिए ठीक है वही रंग दूसरी शीट को नष्ट कर सकता है।

रंगों के अच्छे सुमेलन और रजिस्ट्रेशन के लिए कागज में नमी का अंश बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरा महत्वपूर्ण कारक मुद्रण कक्ष में वायु की सापेक्षित आद्रता (relative humidity) है।

--श्री पी० कुमार
प्रबन्धक(कनिष्ठ)

सम्पर्क सूत्र:

14, वुड स्ट्रीट
पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता-16

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपी आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है।

– जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

मन में परिवर्तन

अनिता अपने दफ्तर से वापस घर लौट रही थी, शाम के छ: बज चुके थे और उसे घर पहुंच कर अपने पति और आठ साल के बेटे के लिए खाना भी बनाना था। आमतौर पर रात आठ बजे तक खाना मेज पर लग जाता था, लेकिन उस दिन अनिता को दफ्तर से निकलने में काफी देर हो गयी जबकि दफ्तर का काम भी अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था।

अनिता को रात में घर से दफ्तर का काम भी कर के भेजना था। वह घर पहुंचने की जल्दी में एक व्यक्ति से टकरा गयी। इसका एहसास होते ही अनिता और वह व्यक्ति एक-दूसरे से बड़ी विनम्रता से क्षमा मांगने लगे। अनिता बोली, जी मैं आपको देख नहीं पायी। कोई बात नहीं ऐसा कहकर दोनों अपने-अपने रास्ते चल दिये। कुछ देर में अनिता घर पहुंची और पहुंचते ही किचन में घुसकर खाना बनाने की तैयारी करने लगी। अनिता सब्जियां काटने और खाना पकाने में व्यस्त थी। तभी उसका बेटा उसके पीछे आकर खड़ा हो गया। अनिता जब कुछ लेने के लिए पीछे पलटी तो वह बेटे से टकरा गयी। वह बेटे पर चिल्ला उठी- क्या है, तब से देख रही हूं, तुम पीछे खड़े हो, जाओ जाकर अपनी पढ़ाई करो।

बेटा आंखों में आंसू लिये, बिना कुछ बोले किचन से चला गया। कुछ देर में खाना बन गया, सबने खाना खा लिया। अनिता भी खाकर दफ्तर के बचे काम निपटाने लगी। उसकी आंखें भी नींद से बोझिल हो रही थी। अचानक उसे याद आया कि जब किचन में वह अपने बेटे से टकरायी तो उसके हाथ में कुछ था। वह झट से उठी और किचन की ओर दौड़ पड़ी। किचन में जाकर उसने देखा कि एक कोने में उसके फेवरेट लाल एवम् पीले फूलों का हाथ से बना गुलदस्ता गिरा पड़ा था। उसकी आंखों में आंसू आ गये। बेटे ने कितने प्यार से माँ के लिए गुलदस्ता तैयार किया था। अनिता अपने अंदर कुछ टूटता हुआ महसूस करने लगी। वह सोचने लगी रास्ते में अनजान व्यक्ति से टकराने पर उसका व्यवहार कितना विनम्र था और अपने बेटे के साथ वह कैसा व्यवहार कर रही थी। वह तड़प उठी। भागी-भागी वह बेटे के पास पहुंची, लेकिन वह तो सो चुका था। वह उसे एकटक निहारने लगी और उसकी आंखों से अनवरत आंसू गिर रहे थे। आंसुओं की बूंद से बेटे की नींद खुल गयी अपने पास माँ को पा वह सब कुछ भूल उनसे लिपट गया।

सच में हम अक्सर अपने नजदीकी लोगों की भावनाओं की अनदेखी कर देते हैं।

--श्री महादेव गोरखनाथ सूर्यवंशी
खलासी

सम्पर्क सूत्र:
महाराष्ट्र एवम् गोआ जीडीसी, पुणे

नजरिया

एक गांव के एक बूढे किसान का नियम था कि वह किसी भी घटना पर अपनी प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त करता था। बस उसका एक ही वाक्य होता था- 'शायद ऐसा हो'। लोग उसे समझ नहीं पाते थे। एक बार उस किसान का घोड़ा रस्सी तोड़कर जंगल की ओर भाग गया। पड़ोसी किसान पास आकर अफसोस जताने लगे। कोई होने वाले नुकसान की बात करता तो कोई घोड़े की ठीक से व्यवस्था न करने की बात कहता। किसान ने सबकी बात सुनी और अंत में कहा-'शायद ऐसा हो'। लोग चुप होकर अपने-अपने घर चले गये।

दूसरे दिन घोड़ा तीन जंगली घोड़ों के साथ वापस लौटा, यह देखकर गॉव वाले उसके भाग्य की सराहना करने लगे। उसने सबकी बातें सुनी और अंत में कहा-'शायद ऐसा हो'। दो दिन बाद किसान का जवान लड़का जंगल से आए नए घोड़े की जीन कसने के प्रयास में गिर गया और उसका पैर टूट गया। लड़के से मिलने आये गॉव वाले अफसोस जताने लगे। किसान अपने अंदाज में बोला-'शायद ऐसा हो'।

अगले दिन राजा के सैनिक गॉव में आये। उन दिनों राजा का पड़ोसी राज्य से युद्ध चल रहा था और सैनिकों की भर्ती का अभियान जारी था। जब सैनिक, बूढे किसान के घर पहुंचे तो उसके लड़के का टूटा पैर देख उसे छोड़कर चले गये। गॉव के लोग फिर किसान के भाग्य को सराहने लगे। किसान ने सबकी बात सुनी और अंत में कहा-'शायद ऐसा हो'।

हम जिन्दगी की घटनाओं को अनुकूल या प्रतिकूल दृष्टि से देखते हैं। ऐसा नजरिया गलत है, क्योंकि घटनायें अपने आप में निरपेक्ष होती है। अत: हम हर चीज को एक निरपेक्ष नजरिये से देखें।

पहले लक्ष्य तय करें

एक व्यक्ति था, उसका चित्त बड़ा चंचल था। उसने काश्तकारी का काम सीखना शुरू किया पर कुछ दिन में मन ऊब गया तो जुलाहे के यहां पहुंच गया। अब कुछ हफ्ते ही हुए थे कि उसे माली का कार्य अच्छा लगने लगा। बागवानी सीखनी शुरू की तो कुछ ही दिन में उससे भी मन भर गया। परेशान होकर एक विद्वान व्यक्ति के पास पहुंचा तो वे बोले, 'बेटा कुछ हासिल करना है तो पहले लक्ष्य तो निर्धारित कर। बिना उद्येश्य के इधर-उधर भटकते रहोगे तो खाली हाथ ही रह जाओगे। इसीलिए परम-पूज्य गुरुदेव ने कहा है- पेण्डुलम हिलता तो बहुत है पर पहुंचता कहीं नहीं, वैसे ही लक्ष्यविहीन व्यक्ति करता तो बहुत है पर पाता कुछ नहीं'।

-श्री बी.के. सोनपरोते
कार्यालय अधीक्षक

सम्पर्क सूत्र:
महाराष्ट्र एवम् गोआ जीडीसी, पुणे

मैं हूं ना

दर्पण कभी झूठ नहीं बोलता इस कारणवश इसे हमेशा ही विश्वासपात्र माना गया है। वैसे ही हमारा भारतीय सर्वेक्षण विभाग इस भारत देश का दर्पण है जिसे हम सर्वेक्षण दर्पण का नाम दे सकते हैं। इस दर्पण का उपयोग देश के प्रगति को प्रमाणित करने हेतु कार्य में लाया जाता है।

देश में जो भी प्रगति के कार्य किये जाते हैं उन सभी कार्यों को पूर्ण रूप देने में हमारे मानचित्रों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। जो भी देश के विकासात्मक कार्य योजनाबद्ध तरीके से पूरे देश में कार्यान्वित किये जाने होते हैं उनमें महत्वपूर्ण भूमिका विभागीय मानचित्रों की होती है। इतना ही नहीं सरकारी संस्थाओं के साथ-साथ निजी प्रतिष्ठानों के लिए भी मानचित्रों की भूमिका अहम् होती है।

महादेव के त्रिनेत्र की भांति भारतीय सर्वेक्षण विभाग, भविष्य में होने वाले राष्ट्र के विकास की रूपरेखा को दर्शाने में सक्षम है। अपने देश में गंगा नदी के जल को सम्पूर्ण एवम् पवित्र स्थान प्राप्त है, जिससे सम्पूर्ण भारत देश की समृद्धि पाने में सहयोग मिलता आया है, वैसे ही हमारे भारतीय सर्वेक्षण विभाग गंगा नदी स्वरूप पवित्र कार्य देश को समृद्धि प्रदान करने के कार्य में सहयोग देता आ रहा है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग को हमेशा एक जिम्मेदार एवम् प्रगति का एक महत्वपूर्ण विभाग होने का मान प्राप्त है। इसकी स्थापना ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा इस्वी सन 1767 में हुई थी। तब से आज तक हमारे इस विभाग ने प्रगति के हर शिखर को प्राप्त कर लिया है। इतने साल का अनुभव होने के बाद भी यह विभाग अपने युवाकालीन जोश के साथ क्रियाशील है। समय के साथ इसने नवीनतम वैज्ञानिक उपकरणों को भी आत्मसात कर आधुनिकीकरण के दौर में कदम बढ़ा लिया है।

यह विभाग अन्य विभागों को एक बड़े भाई के जैसा एक मार्गदर्शक के रूप में जिम्मेदार विभाग के नाते हर प्रगति के कार्य में सहयोग करता आया है। हर कठिन घड़ी में मानो कह रहा हो 'मैं हूं ना' व्यर्थ की चिन्ता क्यों करते हो।

इन्हीं कारण विभाग के द्वारा उपलब्ध प्रमाणिक आंकड़ो में भरोसा कर निश्चिंत हो सभी विभाग देश के प्रगति कार्य में संलग्न हैं। हमारे भारत देश की आत्मा के रूप में हमारा सर्वेक्षण विभाग अचल स्थित है, इस कारण सदैव हमारा विभाग सदा युवा, तेजोमय ज्योति की तरह स्वयं प्रकाशित हो कर दूसरों को अंधेरे से मुक्ति दिलाता हुआ एक पिता के समान हमेशा सभी देश वासियों को कहता रहेगा 'मैं हूं ना' व्यर्थ की चिंता क्यों करते हो 'मैं हूं ना'।

--श्री मकरंद गोपाल कुलकर्णी

अभिलेखपाल डिवि-1

<u>सम्पर्क सूत्र:</u>

महाराष्ट्र एवम् गोआ जीडीसी, पुणे

परिपक्व व अनुभवी व्यक्ति

बात बहुत पुरानी है, एक राज्य की अजीबोगरीब प्रथा के अनुसार, जब भी किसी व्यक्ति उम्र 60 साल हो जाती, तो उसे राज्य से बाहर जंगल में रहने के लिए भेज जाता था ताकि समाज में केवल स्वस्थ और युवा लोग ही जीवित रहें। उस जंगल में वह बुजूर्गवार कैसे जिन्दगी काटेंगे इसकी किसी को फिक्र नहीं होती थी।

उसी राज्य में एक व्यक्ति जल्द ही 60 वर्ष का होने वाला था। उसका जवान बेटा अपने पिता से बहुत प्रेम करता था। बेटा नहीं चाहता था कि उसके पिता को भी अन्य वृद्धों की तरह जंगल में भेज दिया जाये, इसलिए उसने अपने पिता को घर के तहखाने में छिपा दिया और उनकी हर सुविधा का ध्यान रखा।

उसी लड़के ने एक बार अपने पड़ोसी से शर्त लगाई कि अगले दिन सूरज की पहली किरण सबसे पहले कौन देखेगा ? जब उसने अपने पिता को इस बारे में बताया, तो उन्होंने सलाह दी 'ध्यान से सुनो, जिस जगह पर तुम सबके साथ सूरज की पहली किरण देखने का इंतजार करोगे, वहां सभी पूरब की तरफ ही देखेंगे लेकिन तुम उसके विपरीत पश्चिम की ओर देखना। पश्चिम दिशा में सबसे ऊंची पहाड़ी पर नजर रखोगे तो तुम यह शर्त जीत जाओगे।

अगले दिन लड़के ने अपने पिता की हिदायत पर अमल किया और उसने ही सबसे पहले सूरज की पहली किरण देख ली। जब लोगों ने उससे पूछा कि उसे यह सलाह किसने दी तो उसने पूरी प्रजा के सामने यह सच रखा कि उसने अपने पिता को तहखाने में छिपा कर रखा है और वे हमेशा उसका मार्गदर्शन किया करते हैं।

यह सुनकर सभी इस बात को समझ गये कि बुजूर्ग लोग अधिक परिपक्व और अनुभवी होते हैं और उनका सम्मान करना चाहिए । उस दिन के बाद उस राज्य में वृद्धजनों के निष्कासन की प्रथा समाप्त कर दी गयी।

--श्री बी.के. सोनपरोते
कार्यालय अधीक्षक

सम्पर्क सूत्र:
महाराष्ट्र एवम् गोआ जीडीसी, पुणे

चित्रांकन- शुचि दास

सुपुत्री श्री शुभेश कुमार, कोलकाता

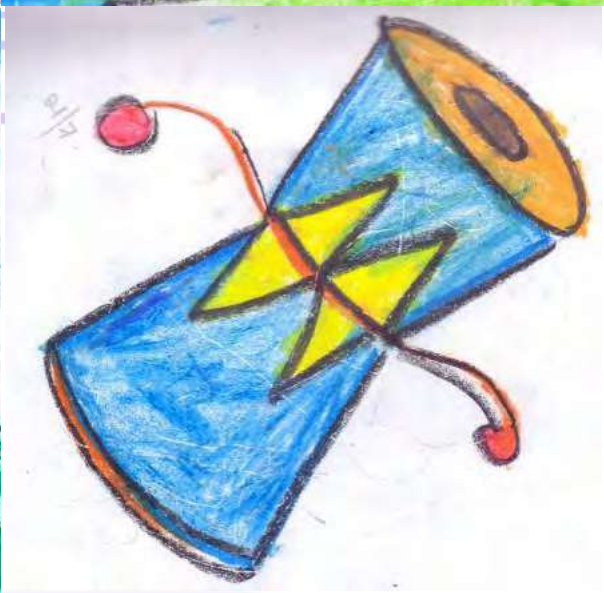

गुदगुदी

कंडक्टर लड़के से ---- तू हमेशा गेट पर खड़ा क्यों रहता है, तेरा बाप चौकीदार है क्या ?

लड़का बोला ------ तू हमेशा पैसे ही क्यों मांगता है तेरा बाप भिखारी है क्या ?

-0-

यमराज ------ बेटी बता कहाँ जाएगी नरक में या स्वर्ग में ?

लड़की ------- धरती से बस मेरा मोबाइल और चार्जर मंगवा दो, मैं तो कही भी रह लूंगी।

-0-

30 दिनों से बिना बताये, घर से गायब पति वापस लौटा ।

पत्नी ----- आपके गम में बीमार पड़ गई थी मर जाती तो ।

पति ------- तो मैं कौन सा श्मशान कि चाबी साथ ले गया था।

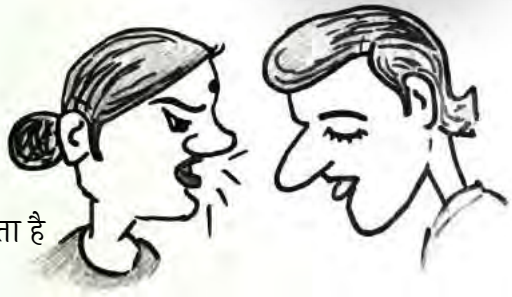

-0-

पत्नी ------ आप बहुत भोले है आपको कोई भी बेवकूफ बना देता है

पति ------ शुरुआत तो तेरे बाप ने की थी।

-0-

दोस्त ----- तुम्हारी आंखे क्यों सुलझी हुई है

लड़का------- कल मैं अपनी पत्नी के जन्मदिन पर केक ले आया था।

दोस्त ------ तो इसका आंख सुजने से क्या संबध है

लड़का ----- मेरी पत्नी का नाम "तपस्या" है लेकिन केक वाले ने गलती से लिख दिया, हैप्पी बर्थडे "समस्या"।

-0-

एक आदमी घर पर बैठा DVD देख रहा था तभी वो जोर-जोर से चीखने लगा : नहीं-नहीं घोड़े पर से मत उतर पागल, मत उतर ये एक चाल है यहाँ जाल बिछा है। कुत्ते कि मौत मरेगा बेवकूफ।

पत्नी ---- (किचन से) कौन सी फ़िल्म देख रहे हो

पति ----- हमारी शादी की DVD।

-0-

एक कुत्ता दुसरे कुत्ते से बोला ---- आज हमारे मालिक ने एक चोर पकड़ा

दूसरा कुत्ता बोला ----- तब तुम क्या कर रहे थे ये काम तो तुम्हारा था।

पहला कुत्ता बोला ----- मैं अपने मालिक की तरह सारी रात जागकर फेशबुक, ह्वाट्सएप, और यूट्यूब नहीं करता हूँ, मैं समय पर सो जाता हूँ।

धर्मपद

कोणार्क का सूर्य मंदिर विश्वप्रसिद्ध है । इसकी वास्तुकला आज भी लोगों का मन मोह लेती है। समुद्र तट पर स्थित इस मंदिर को राजा लाङ्गुला नरसिहं देव द्वितीय ने बनवाया था। राजन ने अपने मंदिर मांगी सिवई संतरा को मंदिर बनवाने की जिम्मेवारी सौंपी। समुद्र तट पर मंदिर का निर्माण कार्य संभव नहीं हो पा रहा था। इस सम्बंध में एक गाथा प्रसिद्ध है-

एक दिन मांगी सिवई सांतरा अश्व पर कहीं जा रहे थे । जाते-जाते जंगल में ही रात हो गई। जंगल के भीतर उन्हें एक रौशनी दिखाई दी । पास गए तो वहां पर एक बुढ़िया दिखाई दी । मांगी को भूख लगी थी, इनके पास खाने को कुछ भी नहीं था । वे बूढी औरत से कुछ खाने को मांगे। उस बूढी औरत ने खाने के लिये जाऊ दिया जाऊ एक प्रकार का खीर है जिसमे दूध और चीनी नहीं पड़ता है । जाऊ गरम था मांगी उसे खाने लगा तो उनका मुँह जल गया। बूढी औरत ने हंसकर कहा तुम तो हमारे मांगी सिवई सांतरा जैसे हो । मांगी ने अपरिचित बनते हुए कहा- आपके मांगी ने क्या किया है । उस बूढी ने कहा कि आप थाली के एक तरफ से जाऊ खाते तो मुँह नहीं जलता। हमारे मांगी जी जो बनवाना चाहतें हैं, वे जो पत्थर समुद्र में डालते है वह बीच में डलवाते है, अगर उसे एक किनारे से डलवाए तो धीरे-धीरे मिट्टी और पत्थर से उन्हें मंदिर बनवाने में सहायता मिलेगी । उससे मंदिर के लिए जगह बन जाएगी । मांगी को बूढ़ी औरत की बात समझ में आ गयी । वही मंदिर आज सूर्य मंदिर के नाम से विख्यात है । इस मंदिर को बनाने में 1200 कारीगर लगातार 16 वर्षों तक काम किये । उन कारीगरों में विसु महराना नाम का एक बढई भी था । जिस समय वह मंदिर बनाने के लिये आया, उस समय उसकी पत्नी गर्ववती थी। वह मंदिर बनाने के लिए जब चला गया तो पीछे उसकी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम धर्मपद रखा गया। 16 वर्षों के लम्बे अंतराल तक विसु मंदिर निर्माण में लगे रहे और अपने पुत्र से दूर रहे। उन्होंने अपने पुत्र की एक झलक भी नहीं देखी थी। मंदिर का काम लगभग ख़त्म होने वाला ही था । इधर धर्मपद बार-बार अपने पिता के पास जाने की जिद कर रहा था । माँ से आज्ञा लेकर वह पिताजी के पास गया । वह भी पिता की मदद करने लगा । मंदिर में केवल चुडा (गुम्बज) लगाना बाकी था और उस पर दधिनौती बिठाना था लेकिन कोई नहीं कर पा रहा था । राजा को जब यह बात पता चला तो उसने कहा कि अगर सात दिनों में काम नहीं होता है तो सभी 1200 कारीगरों का सर धड से अलग कर दिया जायेगा ।

सभी लोग जीवन और मृत्यु के बीच में झूल रहे थे। सप्ताह की आखिरी रात सभी लोग जब सो रहे थे धर्मपद अपने कुछ साथियों को लेकर मंदिर पर चढ़ गया और चुडा लगाने लगा। सुबह लोगों ने देखा कि मंदिर का काम पूरा हो गया। मगर ख़ुशी के माहौल में ग़मों ने घेर लिया, कारण जब राजा को पता चलेगा कि 1200 कारीगर एक काम को नहीं कर सके उसी काम को एक 16 वर्ष का लड़का पूरा किया इसे जानकर सभी कारीगरों को मौत मिलेगा ।

सभी लोग विसु महाराणा के पास गए अपना दुःख सुनाये। धर्मपद को जब पता चला तो उसने कहा राजा को पता नहीं चलेगा कि दधिनौती (मुंडी) कौन लगाया इतना कहकर वह समुद्र में छलांग लगा दिया । उसकी जीवन लीला समाप्त हो गई । आज उस मंदिर को कोणार्क सूर्य मंदिर के नाम से जाना जाता है। इतिहास में धर्मपद का नाम अमर हो गया ।

--श्री कृष्ण चन्द्र दास

अधीक्षक सर्वेक्षक

सम्पर्क सूत्र:

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

कम्प्यूटर के जादुई ट्रिक्स

हम लोग सदैव चाहेंगे कि हमारा प्रत्येक कार्य कम्प्यूटर की तीव्र गति से हो। परंतु कम्प्यूटर पर कार्य करना भी यदि और त्वरित गति से सम्भव हो जाए तो क्या कहने। तो चलिए आज हम आपको कुछ ऐसे स्पेशल कम्प्युटर कमांड के बारे में बताता हूं जिससे कम्प्यूटर पर कार्य करते समय आपको सहजता का अनुभव होगा। ये जादुई कुंजियों का संयोग (Keys combination) आपके सभी कार्यों को पलक झपकते पूरा कर देगा। तो चलिए की-बोर्ड का प्रयोग केवल टाइपिंग के लिए न करके कुछ स्पेशल कार्यों के लिए करते हैं। ये सॉर्ट-कट की यूं तो बहुत है परंतु इनमें से कुछ महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं।

Windows explorer या माय कंप्यूटर में –

- Ctrl + Shift + N – अगर आप न्यू फोल्डर तैयार करना चाहते हैं
- Alt + Up Arrow – अगर आप जिस फोल्डर में है उससे एक स्टेप पीछे जाना चाहते हैं
- Alt + Enter – सिलेक्टेड ऑब्जेक्ट का प्रॉपर्टीज दिखेगा
- Alt + F4 / Ctrl + W – एक्टिव आइटम को क्लोज करेगा एबं प्रोग्राम को बंद करेगा
- Alt + Tab – ओपन विंडोज को सेलेक्ट करने के लिये।
- Alt + F – कोई भी प्रोग्राम का फाइल मेनू खुल जायेगा
- Shift + Del – सिलेक्टेड ऑब्जेक्ट को recycle bin में नही डाल कर परमानेंट डिलीट करेगा
- Shift + Right Click on a file – अगर आप कोई फाइल का पूरा पाथ या एड्रेस क्लिपबोर्ड में कॉपी करना हों तो बाद मे उस पाथ को कही भी ctrl+v से पेस्ट कर सकते हैं ।
- Shift + Right Click on a folder – यह बहुत ही काम का है । अगर कोई लम्बा पाथ में कमांड प्रांट के द्वारा जाना चाहते हो तो यह आपको सहायता करेगा। यह कमांड देने से आपको Open command window here का एक विकल्प मिलेगा जो सीधे कमांड प्रॉम्प्ट के अंतगर्त उस फोल्डर में आपको ले जाएगा।
- Win + (+/-) – इसका प्रयोग जूम करने के लिए करते हैं ।
- Win + Home – एक्टिव विंडो छोर कर सभी विंडो क्लियर हो जाता है।
- Win + Up Arrow – एक्टिव विंडो को सर्वाधिक(Maximize) स्क्रीन का बनाते हैं ।
- Win + Down Arrow – एक्टिवे विंडो को न्यूनतम (Minimize) अर्थात टास्कबार में ले जाता है।
- Win + Left/Right Arrow – यह विंडो को बायें/दाहिने साइड में ले जाएगा।
- Win + D – सभी विंडोज को छुपाने या दिखाने के लिए ।
- Win + E – माय कंप्यूटर ओपन होता है
- Win + F – फ़ाइल्/फोल्डर खोजने के लिए
- Win + R – रन कमांड ओपन करने केलिए
- Win + Pause – सिस्टम का प्रॉपर्टीज देखने के लिए
- Win + X + Y – ये सीधे आपको कम्प्यूटर के कंट्रोल पैनल के अंतर्गत 'सिस्टम' मेनु में ले जाएगा।

• Win + X + F – प्रोग्राम & फीचर्स	• Win + X + T – टास्क मैनेजर
• Win + X + O – पॉवर विकल्प (Option)	• Win + X + P – कंट्रोल पैनल
• Win + X + V – इवेंट viewer	• Win + X + E – फाइल एक्स्प्लोर्रर
• Win + X + M – डिवाइस मैनेजर	• Win + X + S – सर्च
• Win + X + K– डिस्क मैनेजमेंट	• Win + X + R – रन कमांड
• Win + X + G - कंप्यूटर मैनेजमेंट	• Win + X + D – डेस्कटॉप
• Win + X + C – कमांड प्रॉम्प्ट	

एक बार मै फँस गया था जब मैंने देखा मेरे दोस्त का कंप्यूटर का मॉनिटर का डिस्प्ले उल्टा हो गया तब नेट सर्च करके के बाद मुझे यह शॉर्ट-कट की मिला –

Ctrl + Alt का साथ *Up Arrow या Down Arrow या Left Arrow या Right Arrow* का इस्तेमाल करना होगा जिस साइड में चाहे आप डिस्प्ले को घुमा सकते हैं।

अगर की-बोर्ड में कोई की ख़राब हो जाता है तो टाइपिंग कैसे करें?

Win + R दबा कर osk लिखने के बाद इंटर की प्रेस करने से virtual की-बोर्ड डिस्प्ले हो जाता है उसके बाद माउस से टाइप किया जा सकता है। लेकिन O या S या K की ही ख़राब हो जाए तब यह प्रोसेस काम नहीं करेगा । तब क्या करना है ?

032 sp	048 0	064 @	080 P	096 `	112 p
033 !	049 1	065 A	081 Q	097 a	113 q
034 "	050 2	066 B	082 R	098 b	114 r
035 #	051 3	067 C	083 S	099 c	115 s
036 $	052 4	068 D	084 T	100 d	116 t
037 %	053 5	069 E	085 U	101 e	117 u
038 &	054 6	070 F	086 V	102 f	118 v
039 '	055 7	071 G	087 W	103 g	119 w
040 (	056 8	072 H	088 X	104 h	120 x
041)	057 9	073 I	089 Y	105 i	121 y
042 *	058 :	074 J	090 Z	106 j	122 z
043 +	059 ;	075 K	091 [	107 k	123 {
044 ,	060 <	076 L	092 \	108 l	124 |
045 -	061 =	077 M	093]	109 m	125 }
046 .	062 >	078 N	094 ^	110 n	126 ~
047 /	063 ?	079 O	095 _	111 o	127 ⌂

हमारे की-बोर्ड में जितना भी की होता है सभी का ascii code होता है ।। इसी ascii code को अगर हम Alt की और नुमेरिक की पैड के साथ से टाइप करे तो सम्बंधित करैक्टर प्राप्त होगा। जैसे Alt + 065 से A टाइप होगा । कुछ महत्वपूर्ण ascii code दिया गया है ।

अगर कोई भी कंप्यूटर का IP एड्रेस जानना है तो कमांड प्रांट में ipconfig टाइप करके इंटर करने से आपको यह प्राप्त हो जायेगा. LAN में कनेक्टेड कंप्यूटर को एक्सेस करने के लिए उस कंप्यूटर का नाम से पहले \\ देना पड़ेगा। जैसे \\comp131\d\dgn .

यदि आपको इस सम्बंध में कुछ भी सूचना प्राप्त करना हो तो यहां मेल कर सकते हैं- workshop.gdckolkata@gmail.com

--श्री उत्तम कुमार साधुखाँ

मानचित्रकार डिविजन-1

सम्पर्क सूत्र:

13, वुड स्ट्रीट

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता-16

दूरभाष : 79808 51009

हिन्दी समारोह-2017 की झलकियां

43वीं भारत-बांग्लादेश संयुक्त सीमा सम्मेलन

सत्यमेव जयते
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
DEHRA DUN
DELHI
CALCUTTA
BOMBAY
MADRAS
SURVEY OF INDIA
आसेतु
हिमाचलम
1767

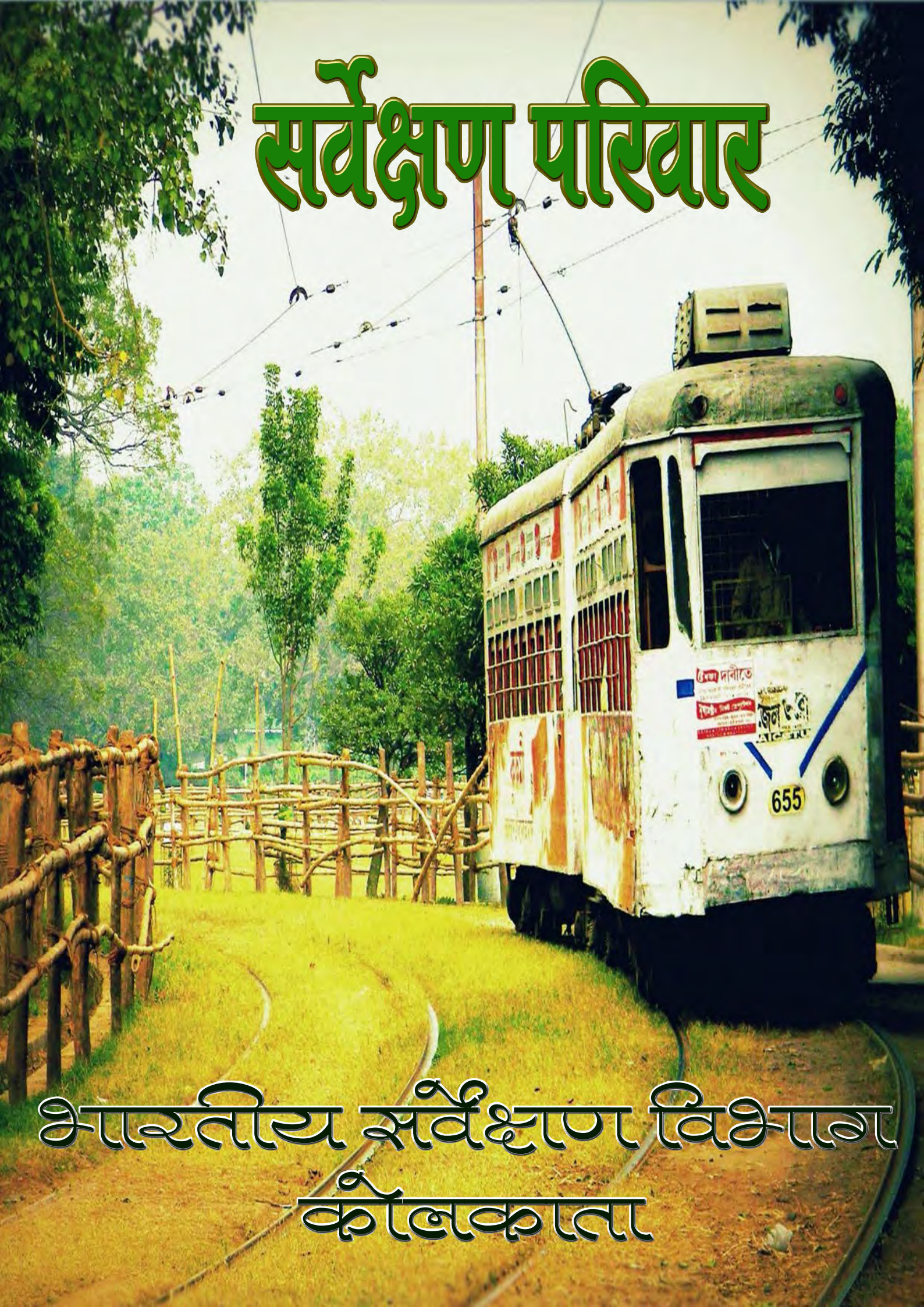

सर्वेक्षण परिवार

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
कोलकाता